दैनिक भास्कर
विशेष प्रस्तुति

अ से शिक्षक

उन फरिश्तों के सम्मान में, जो अज्ञानता के इस अंधेरे में हमें प्रेरणा की रोशनी दे रहे हैं।

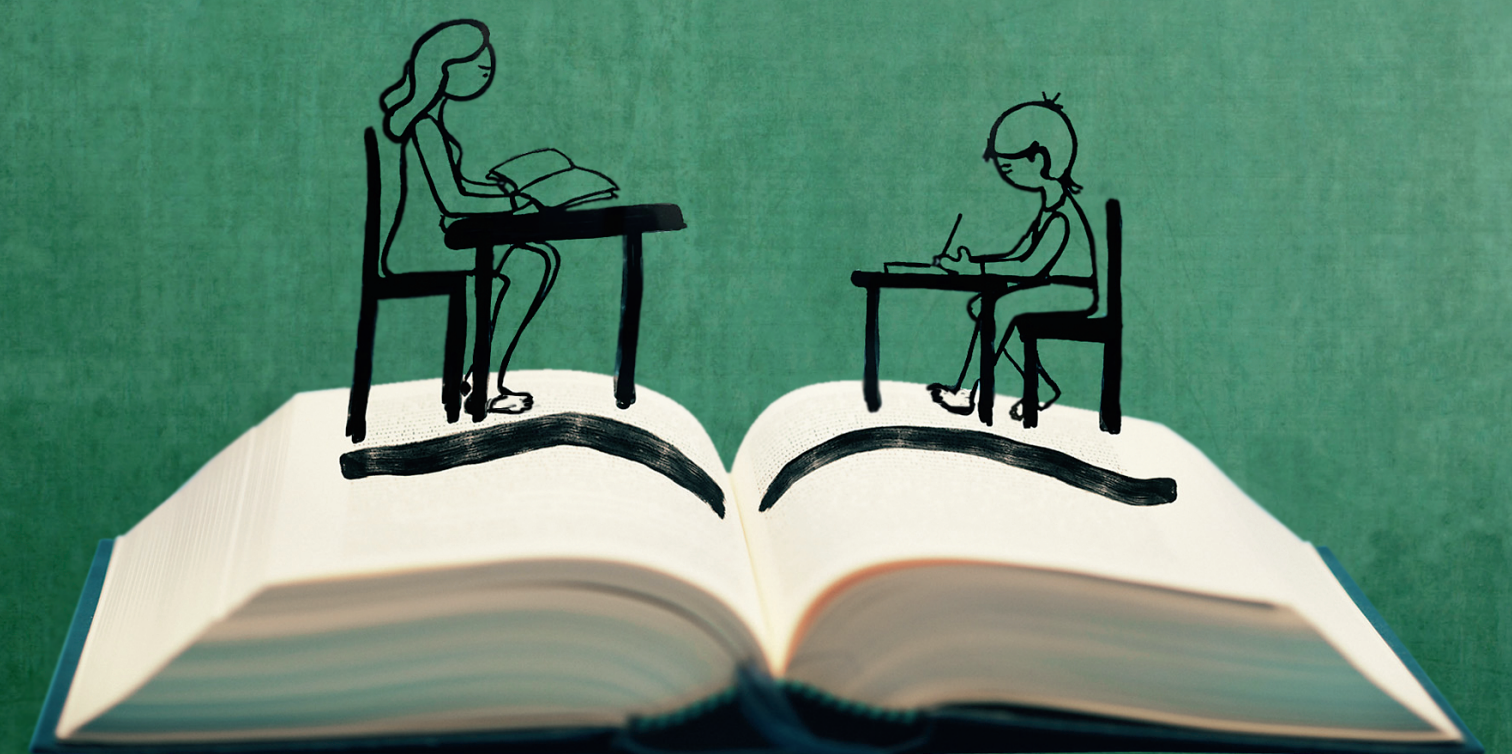

• जन्म: 1888 • निधन 1975

देश के हर शिक्षक के सम्मान में

शिक्षक की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह हमें खुद को पढ़ना सिखाते हैं। वे जीवन की बुनियाद ज्ञान और विज्ञान की नींव पर रखते हैं।

-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भास्कर विचार

भारत छात्रों और शिक्षकों का देश है। इस समय देश में 35 करोड़ छात्र हैं। इनमें से 26 करोड़ तो सिर्फ स्कूलों में पढ़ रहे हैं। अन्य 9 करोड़ उच्च शिक्षा में है। इस विशाल विद्यार्थी वर्ग को शिक्षित और संस्कारित बनाने में लाखों शिक्षक और लाखों शिक्षण संस्थान समर्पण के साथ जुटे हुए हैं। ये व्यवस्था बहुत पेचीदा है और मुश्किलों से घिरी हुई भी है, बावजूद इसके देश की प्रतिभाएं भारत ही नहीं पूरी दुनिया की बौद्धिक और प्रबंधकीय जरूरतों को पूरा कर रही हैं। हमारे विद्यार्थी , शिक्षक और शिक्षण संस्थान दुनिया को बेहतर और जीवन को सुंदर बनाने के प्रयास में जुटे हैं। इसके लिए वे कठोर परिश्रम कर रहे हैं और कठिन परीक्षाओं से गुजर रहे हैं। शिक्षक दिवस की यह विशेष मैग्जीन इन प्रयासों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षा में ट्रेंड को सामने लाती है। यह मैग्जीन देश के हर उस शिक्षक के सम्मान में समर्पित है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी युवाओं को संस्कारित कर रहे हैं...

इनसाइड

मेरे शिक्षक मेरे निर्माता
पेज- 3 से 6

स्कूली शिक्षा का परिदृश्य
पेज- 7 से 11

उच्च शिक्षा की स्थिति
पेज- 12 से 16

तकनीकी/प्रोफेशनल शिक्षा
पेज- 17 से 19

प्रमुख प्रतियोगी परीक्षाएं
पेज- 20 से 25

अन्य उभरते क्षेत्र
पेज- 26 से 28

कोचिंग का परिदृश्य
पेज- 29

ई-लर्निंग
पेज- 30

हमारे इनोवेटिव शिक्षक
पेज- 31

मेरे शिक्षक-मेरे निर्माता ■ महात्मा गांधी के विचारों में शिक्षक

जो मित्र, सहयोगी और पथ-प्रदर्शक का कार्य करे वह है सच्चा शिक्षक

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शिक्षक की आदर्श छवि सामने रखी है। वे कहते हैं कि मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास करने वाला सच्चा शिक्षक है।

आत्मकथा में गांधी ने अपने शिक्षक कृष्णशंकर पंड्या के बारे में लिखा है कि उनके प्रोत्साहन पर अगर मैंने संस्कृत नहीं सीखी होती तो अपनी पवित्र संस्कृति को कभी समझ नहीं पाता।

महात्मा गांधी हाई स्कूल में थे, तब का एक किस्सा उन्होंने लिखा है- 'संस्कृत बहुत कठिन लगती थी। ज्योमैट्री में याद रखने के लिए कुछ नहीं था, जबकि संस्कृत में सबकुछ मन से याद ही करना होता था। जब मैं छठी क्लास में आया तो हमारे स्कूल में फारसी और संस्कृत भाषा को लेकर एक तरह से प्रतिद्वंद्विता चल रही थी। जो शिक्षक फारसी भाषा पढ़ाते थे वे अधिक उदार थे। बच्चे आपस में बात करते थे कि फारसी बहुत आसान है। फारसी शिक्षक बहुत अच्छे और छात्रों के प्रति नरम हैं। इस बात ने मुझे आकर्षित किया और एक दिन मैं फारसी की कक्षा में बैठ गया। इस पर संस्कृत शिक्षक को दुख हुआ कि मैंने उनकी क्लास छोड़ दी। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा- क्या तुम अपनी ही भाषा नहीं सीखोगे? अगर कोई कठिनाई है, तो मेरे पास क्यों नहीं आते? मैं छात्रों को अपनी क्षमता के अनुसार अच्छे तरीके से संस्कृत पढ़ाना चाहता हूं। जैसे-जैसे तुम आगे बढ़ोगे, इसमें रुचि जगाने वाली चीजें पाओगे। हिम्मत मत हारो, आओ और फिर से संस्कृत की कक्षा में बैठो।'

'उनकी इन प्रेरक बातों ने मुझे शर्मसार कर दिया। मैं अपने शिक्षक के स्नेह को नजरअंदाज नहीं कर सकता था। आज मैं संस्कृत के उन शिक्षक कृष्णशंकर पंड्या का आभार मानता हूं,

क्योंकि अगर मैंने उस समय संस्कृत नहीं सीखी होती तो मेरे लिए भविष्य में भी हमारी पवित्र किताबों में दिलचस्पी लेना मुश्किल हो जाता। वास्तव में मुझे गहरा दुख है कि मैं संस्कृत भाषा को और अधिक गहराई से नहीं सीख सका। हर हिंदू लड़के और लड़की के पास अच्छी संस्कृत शिक्षा होनी चाहिए।'

प्रतिभाशाली शिक्षकों की सराहना और सम्मान जरूरी है, लेकिन हमें उन शिक्षकों का आभार मानना चाहिए, जिन्होंने मानवीय भावनाओं को छुआ। बच्चों को शिक्षित करने के लिए पाठ्यक्रम आवश्यक कच्चा माल है। लेकिन इससे ज्यादा जरूरी है बढ़ते बच्चे की आत्मा की गर्मी को महसूस करना।

- कार्ल जंग

शिक्षा पर गांधी दर्शनः कैसे होने चाहिए- शिक्षक, छात्र, स्कूल

शिक्षक- शिक्षक मुख्य होता है। वह शिक्षा को समाज का आदर्श, ज्ञान का पुण्य और सत्य आचरण करने वाला होना चाहिए। इस पेशे को केवल व्यवसाय के रूप में स्वीकार करने वाला व्यक्ति कभी आदर्श शिक्षक नहीं हो सकता और आदर्श शिक्षक वही है जो इस व्यवसाय को सेवा के रूप में कार्य करें। वे बच्चों के पिता, मित्र, सहयोगी और पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करें।

छात्र- छात्र को अनुशासित रहना चाहिए। अनुशासन तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उसे शरीर, मन, आत्मा के विकास पर काम करना चाहिए। आत्मनिर्भर बनना चाहिए। शिक्षा से मेरा मतलब है- शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ गुणों को धारण करना, उन्हें विकसित करना।

स्कूल- स्कूल ऐसे होने चाहिए जहां शिक्षक सेवा भाव से पूर्ण निष्ठा के साथ पढ़ाएं। जहां, समुदाय के लोगों को पढ़ने और कार्य करने की सुविधा उपलब्ध हो। रात में पाठशालाएं लगातार प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था करें।

मेरे शिक्षक-मेरे निर्माता ■ डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

पढ़ो, बढ़ो, करो... शिक्षकों के वो तीन शब्द जिन्होंने शिखर पर पहुंचाया

शिष्य के मन में सीखने की इच्छा को जागृत कर दे वही सच्चा शिक्षक है। सही-गलत का भेद बताकर शिक्षक ही समाज और देश के विवेक को भी जागृत करता है।

शिक्षक जब कहते हैं- पढ़ो, बढ़ो और करो तो ये सिर्फ उनके निर्देश नहीं होते, इन तीन शब्दों के पीछे एक रचनाकार का मन होता है, जो सिर्फ बच्चे का ही नहीं एक समाज और एक राष्ट्र का भी निर्माण कर रहा होता है। देखिए, कैसे शिक्षकों के शब्द महान हस्तियों की प्रेरणा बने।

एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों के लिए पढ़ाई आसान बना देता है।

यहां तक कि शिक्षक के जाने के बाद भी छात्र उनके पढ़ाए पाठ के बारे में सोचते रहते हैं। कोई पढ़ाने का दबाव महसूस करके अच्छा शिक्षक नहीं बन सकता। शिक्षक के लिए पढ़ाना धर्म है, यह पेशा वह किसी के दबाव में नहीं, आत्मा की प्रेरणा से स्वीकार करता है।

-तिरुवल्लुवर

शिव सुब्रमण्यम अय्यर- जिन्होंने मुझमें भौतिकी पढ़ने की ललक जगाई

मेरे गांव में तो गिने-चुने लोग ही विमानों पर चर्चा कर सकते थे। मेरी जिज्ञासा एक शिक्षक ने शांत की। तब मैं 10 साल का था और पांचवीं कक्षा में था। शिक्षक का नाम शिव सुब्रमण्यम अय्यर था। एक दिन 65 छात्रों की कक्षा में उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाकर बताया कि पक्षी कैसे उड़ते हैं। उसी दिन वे हमें रामेश्वरम के समुद्र तट पर ले गए, जहां समुद्री पक्षी उड़ रहे थे। बताया कि पक्षी कैसे अपने पंख फैलाते हैं, अपने पंखों और पूंछ का उपयोग कर दिशा बदलते हैं। उड़ान के पीछे कौन-सा बल होता है। विमान इसी सिद्धांत के आधार पर उड़ता है। एक घंटे के इस सबक के बाद मैं पक्षी की उड़ान का रहस्य समझ गया। मेरे शिक्षक ने मुझे जीवन का उद्देश्य दे दिया। मुझे भौतिक विज्ञान के अध्ययन का महत्व समझ में आ गया। मैंने भौतिकी को चुना। मैंने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को प्राथमिकता दी और फिर रॉकेट इंजीनियर बना। उसके बाद अंतरिक्ष वैज्ञानिक। **-2003 में एक संबोधन में कहा**

■ अमिताभ बच्चन

फ्रैंक ठाकुरदास- मुझे स्टेज पर बोलना, हाव-भाव प्रकट करना सिखाया

मुझे आज भी याद है कि प्रोफेसर फ्रैंक ठाकुर दास ने मुझसे कॉलेज की ड्रामा सोसायटी द्वारा आयोजित नाटकों में बिना देर किए भाग लेने के लिए कहा था। फ्रैंक ठाकुरदास, दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज में इंग्लिश पोएट्री के शिक्षक थे। पहली मुलाकात में ही वे मेरे मेंटर बन गए थे। उनकी वजह से ही मैंने थिएटर की दुनिया की एबीसीडी, जैसे स्टेज पर कैसे संवाद बोलना होता है और अभिनय के दौरान किसी भी किरदार के हाव-भाव कैसे प्रदर्शित किए जाते हैं, सीखा था। वे शानदार अभिनेता और निर्देशक थे। उन्होंने ही मिरांडा हाउस में एक एकांकी नाटक में भाग लेने के लिए मेरा नाम भेजा था। **-2017 में दिए गए एक साक्षात्कार में**

मेरे शिक्षक-मेरे निर्माता ■ सचिन तेंडुलकर

रमाकांत आचरेकर- जिन्होंने मुझे सीधे बल्ले से खेलना सिखाया

अध्यापक केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि मूल्य भी देते हैं। आचरेकर सर ने मुझे सीधे (स्ट्रेट) खेलना सिखाया, केवल मैदान पर नहीं बल्कि जिंदगी में भी। मैं अपने स्कूल की जूनियर टीम में क्रिकेट खेलता था और हमारी सीनियर टीम वानखेड़े स्टेडियम में हैरिस शील्ड फाइनल खेल रही थी। उसी दिन कोच आचरेकर ने मेरे लिए एक प्रैक्टिस मैच का आयोजन कर रखा था। मैं उस प्रैक्टिस मैच को खेलने नहीं गया और वानखेड़े स्टेडियम जा पहुंचा। मैं वहां अपने स्कूल की सीनियर टीम को चियर कर रहा था। मैच खत्म होने के बाद मैं सर के पास गया और उन्हें नमस्ते कहा। सर ने पूछा, आज तुमने कितने रन बनाए मैच में? मैंने कहा, सर हमारी सीनियर टीम यहां खेल रही थी तो मैं यहां उनके लिए चीयर करने आया हूं। यह सुनते ही सर ने सबके सामने मुझे डांटा। तुम्हें दूसरों के लिए ताली बजाने की जरूरत नहीं है। तुम अपने क्रिकेट पर ध्यान दो। ऐसा कुछ हासिल करो कि दूसरे तुम्हारे लिए ताली बजाएं। मेरे लिए यह बहुत बड़ा सबक था, इसके बाद मैंने कभी भी मैच मिस नहीं किया। **स्रोतः एक इंटरव्यू में कहा**

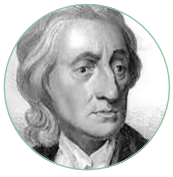

किसी भी शिक्षक के लिए कमांड या कंट्रोल करना, पढ़ाने से ज्यादा जरूरी होता है।

एक हजार दिनों की मेहनत से बेहतर है महान शिक्षक के साथ बिताया एक दिन। शाबाशी और चुनौतियों के सही मिश्रण से शिक्षक जीवन बदल सकते हैं।

-जान लॉक

■ नीरज चोपड़ा

जयवीर सिंह- जिन्होंने मेरा परिचय जेवलिन से कराया

मेरे सीनियर जयवीर सिंह ने पहली बार जेवलिन से मेरा परिचय कराया था। वे मेरे पहले टीचर थे, आज मैं जो भी हूं उनकी वजह से ही हूं। उन्होंने मुझे न सिर्फ खेल की बारीकियां सिखाईं, बल्कि खुद में विश्वास करना भी सिखाया। उन्हीं का सबक था कि बिना स्वार्थ के अपने जूनियर्स का हमेशा सहयोग करो, उन्हें गाइड करो। उन्होंने ही मुझे अपना काम गंभीरता से करने और उसमें 100 प्रतिशत देना सिखाया।

■ विराट कोहली

राजकुमार शर्मा - जिन्होंने दिखाई सफलता की राह

कुछ सालों पहले की बात है- शिक्षक दिवस के दिन विराट के कोच राजकुमार शर्मा के घर की घंटी बजी। देखा कि सामने विराट के भाई विकास खड़े हैं। इतनी सुबह उसे अपने घर पर देखकर राजकुमार चिंतित हुए। विकास ने कहीं फोन मिलाया और फोन राजकुमार शर्मा को पकड़ा दिया। दूसरी ओर से विराट की आवाज आई, 'हैप्पी टीचर्स डे सर।' विकास ने उनके हाथ में चाबियों का गुच्छा पकड़ा दिया। उनके घर के बाहर एक चमचमाती कार खड़ी थी। यह कार विराट का अपने मेंटर को गिफ्ट था। राजकुमार कहते हैं यह सिर्फ एक कार नहीं, बल्कि उनके बीच का मजबूत संबंध था और इससे यह भी जाहिर होता था कि विराट के जीवन में शिक्षक का कितना अहम रोल है। विराट ने अपने गुरु के बारे में बाद में कहा- एक शिक्षक आपके सफर में कई अहम सीख देता है। मुझे मेरे कोच राजकुमार शर्मा से जो कुछ भी सीखने को मिला मैं उनके लिए हमेशा आभारी रहूंगा।

मेरे शिक्षक-मेरे निर्माता ■ अजीम प्रेमजी

केनेथ डायर- जिन्होंने मुझे अनुशासन का महत्व बताया

मुंबई का सेंट मैरी स्कूल में सभी आय वर्ग और पृष्ठभूमि के परिवारों के बच्चों का समावेश था। सेंट मैरी में शिक्षण के बहुत उच्च मानक तो थे ही खेल पर भी बहुत जोर था। वहां के शिक्षक जो मुझे आज भी याद हैं, वे थे केनेथ डायर। वे हमें अंग्रेजी और गणित पढ़ाया करते थे। मैं उनसे पहली बार तब मिला था जब मैं सातवीं कक्षा में था और उन्होंने हमें 3-4 साल तक पढ़ाया। वे एक असाधारण व्यक्ति थे। मैं उन्हें हमेशा याद करता हूं, क्योंकि मैं जीवन में जितने भी शिक्षकों से मिला वे उनमें सबसे ज्यादा अनुशासित और अपने छात्रों का ध्यान रखने वाले थे। उनके ये गुण मैं कभी नहीं भूल सकता। उनके सेवानिवृत्त होने के बाद भी मैंने हमेशा उनसे संपर्क बनाए रखा। **-2006 में एक साक्षात्कार में**

■ सुंदर पिचई

बिल कैंपबेल- जिन्होंने मुझे खुद से सवाल पूछना सिखाया

बिल कैंपबेल कोलंबिया विश्वविद्यालय के फुटबॉल कोच थे। फिर वे बिजनेस कोच बने। जब भी वे मुझसे मिलते हमेशा एक सवाल जरूर करते- इस सप्ताह किन बंधनों को तोड़ा है? उनके सवाल का मतलब होता था कि इस सप्ताह किन रुकावटों को तुमने खत्म किया। अपने में क्या सुधार किया। यह सवाल मेरे लिए अहम बन गया। जब कोई मामला किसी लीडर के सामने आता है तो समाधान के लिए विकल्प भी होते हैं। हर विकल्प की कमी और फायदे होते हैं। फैसले लेने में त्रुटियों के महत्वपूर्ण परिणाम हो सकते हैं।

-जस्टिन बारिसो को दिए एक साक्षात्कार में

इतिहास एकमात्र सच्चा शिक्षक है और क्रांति सबसे अच्छा स्कूल। पढ़ाना आशावाद का सबसे बड़ा कार्य है।

छात्रों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितना जानते हैं। उन्हें फर्क इस बात से पड़ता है कि शिक्षक उनका कितना खयाल रखते हैं।

- रोजा लग्जेमबर्ग

■ लता मंगेशकर

मास्टर ग़ुलाम हैदर ने मुझे प्लेबैक सिंगिंग की बारीकियां सिखाईं

लता मंगेशकर अपनी जिंदगी में पिता के अलावा चंद शिक्षकों के नाम लेती हैं। उनमें मास्टर ग़ुलाम हैदर का नाम सबसे प्रमुख है। वे कहती हैं- 'मैं पार्श्वगायिका बनने के लिए संघर्षरत थी, उस समय मुझमें मास्टर ग़ुलाम हैदर ने सबसे ज्यादा विश्वास जताया। उन्होंने मुझे सिखाया कि गीत के बोल साफ हों। हिन्दी और उर्दू का उच्चारण बिल्कुल साफ और स्पष्ट हो। जब भी किसी धुन में कोई बीट आती है, तो वहां जो बोल आए, उसे माइक पर क्रास करके गाया करो। इससे बीट की जगह आने वाली आवाज़ सॉफ्ट टोन में सुनाई देगी। आवाज़ फटनी नहीं चाहिए।

स्रोत- यतींद्र मिश्र की किताब लता सुरगाथा

भारतीय स्कूली शिक्षा- दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्था

15 लाख स्कूलों में 26 करोड़ छात्रों का भविष्य बना रहे हैं 96 लाख शिक्षक

हमारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था दुनिया में सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली मानी जाती है। इसमें 26 करोड़ से अधिक छात्र हैं।

इन बच्चों का भविष्य बनाने में देश के 15 लाख से अधिक स्कूलों में 96 लाख से अधिक शिक्षक जुटे हैं।

भारत में दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक शिक्षा प्रणाली है। कुछ समय पहले जब केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने यह बात कही थी, तो इसके पीछे पुख्ता आंकड़े भी पेश किए थे। जैसे- शहरी क्षेत्रों में 2.49 लाख, जबकि गांवों में 12.58 लाख स्कूल हैं। इन स्कूलों में पढ़ रहे 26 करोड़ से अधिक छात्रों का भविष्य बनाने में 96 लाख से अधिक शिक्षक जुटे हैं। छात्रों का यह आंकड़ा कई बड़े देशों की आबादी से भी अधिक है। इनमें महिला शिक्षकों की संख्या पुरुषों से अधिक है। महिला शिक्षक जहां 49.2 लाख हैं, तो पुरुष शिक्षकों की संख्या 47.71 लाख है।

हालांकि दुनिया की शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता के मामले में भारत 33वें नंबर पर आता है। यह रैंकिंग तीन मानकों के आधार पर दी जाती है- अच्छे तरीके से विकसित पब्लिक एजुकेशन सिस्टम, अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा और कितने लोग उच्च शिक्षा हासिल कर रहे हैं। इस आधार पर क्वालिटी इंडेक्स में भारत को 2020 में 59.1 अंक प्राप्त हुए थे। जबकि अपॉर्च्युनिटी इंडेक्स में भारत को 48.21 अंक मिले थे। लेकिन भारत एक बड़ी शिक्षा प्रणाली वाला देश है और इसकी अपनी चुनौतियां हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इतनी बड़ी शिक्षण व्यवस्था में धीमी गति से ही सही पर सुधार हो रहा है। वर्ष 2018-19 की तुलना में 2019-20 में स्कूली शिक्षा, छात्र शिक्षक अनुपात, लड़कियों के नामांकन के सभी स्तरों पर सुधार हुआ है। साथ ही बिजली, कंप्यूटर और इंटरनेट सुविधा वाले स्कूलों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। भारत में स्कूली शिक्षा के लिए वर्ष 2019-20 की संयुक्त जिला शिक्षा सूचना प्रणाली प्लस (UDISE+) रिपोर्ट में यह बात की गई है। 2019-20 में पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक तक स्कूली शिक्षा में कुल छात्रों की संख्या 26.45 करोड़ के पार पहुंच गई। यह 2018-19 की तुलना में 42.3 लाख अधिक है। रिपोर्ट के अनुसार स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर नामांकन अनुपात में सुधार हुआ है। सभी स्तरों पर छात्र-शिक्षक अनुपात (पीटीआर) में भी सुधार हुआ है।

शिक्षक आपको प्रेरित करते हैं, आपके मन में उत्साह जगाते हैं।

ऐसा वो इसलिए करते हैं क्योंकि जीवन में बहुत कुछ सीखने के लिए प्रेरणा और उत्साह सबसे ज्यादा जरूरी है।

- निकोलस स्पार्क्स, अमेरिकी उपन्यासकार, पटकथा लेखक

देश में कुल स्कूल- 1507708

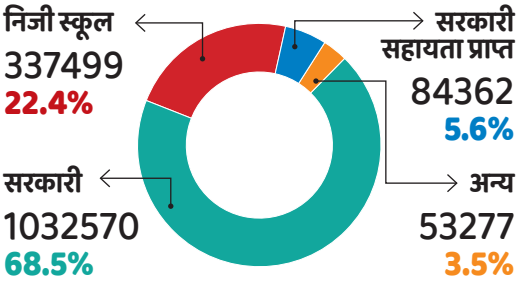

स्कूलों में कुल शिक्षक- 9687577

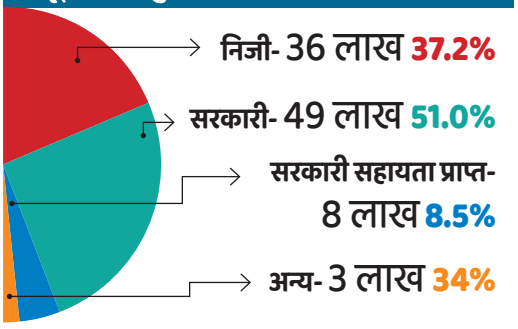

कुल छात्र- 26.45 करोड़

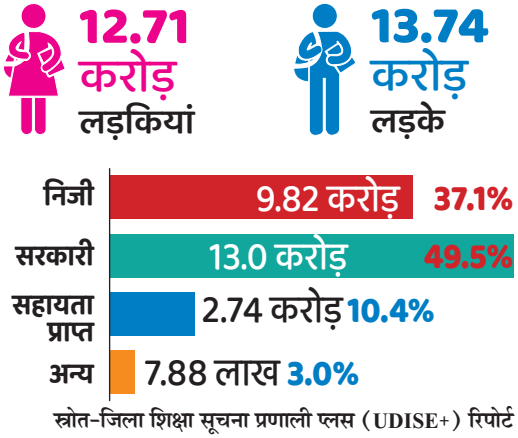

स्रोत-जिला शिक्षा सूचना प्रणाली प्लस (UDISE+) रिपोर्ट

भारतीय स्कूली शिक्षा- दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्था

कुल शिक्षकों में महिलाएं 51 फीसदी दो साल में बढ़े ढाई लाख शिक्षक

स्कूली शिक्षा में छात्र-शिक्षक अनुपात तो सुधर ही रहा है। पढ़ाने वाली महिला शिक्षक और पढ़ने वाली छात्राओं की संख्या भी सभी स्तरों पर सुधर रही है।

देश में महिला शिक्षकों की संख्या पुरुषों की तुलना में ज्यादा बढ़ रही है। 2013 में देश में पुरुष शिक्षकों की संख्या अधिक थी, लेकिन अब महिला शिक्षकों की संख्या अधिक हो गई है।

महिला शिक्षक 47 लाख से बढ़कर 49 लाख हुईं

देश के स्कूलों में 2012-13 की तुलना में 2019-20 में शिक्षकों की संख्या में अच्छी वृद्धि देखी गई है। अगर 2018 से ही तुलना करके देखी जाए तो तब देश में 94.3 लाख शिक्षक थे। 2019- 2020 तक आते-आते इस संख्या में 2.5 लाख की बढ़ोतरी हुई। दिलचस्प बात यह है कि देश में महिला शिक्षकों की संख्या पुरुषों की तुलना में ज्यादा बढ़ रही है। 2013 में देश में पुरुष शिक्षकों की संख्या अधिक थी, लेकिन अब महिला शिक्षकों की संख्या अधिक हो गई है। महिला शिक्षकों की हिस्सेदारी 47% से बढ़कर 51% हो गई है। 2012-13 में महिला शिक्षकों की संख्या 35.8 लाख थी, जो अब बढ़कर 49.2 लाख हो गई है। जबकि इस दौरान पुरुष शिक्षकों की संख्या 42.4 लाख से बढ़कर 47.7 लाख हो गई है।

2012-2013
में देश में स्कूलों में पुरुष शिक्षक ज्यादा थे

2019-2020
सात साल में महिला शिक्षक पुरुषों से ज्यादा

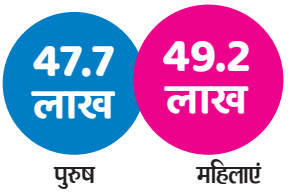

जो बच्चों को अच्छी तरह से शिक्षित करते हैं उन्हें उन लोगों की तुलना में ज्यादा सम्मानित किया जाना चाहिए

जो उन्हें पैदा करते हैं, क्योंकि इन्होंने केवल उन्हें जीवन दिया है लेकिन शिक्षक उन्हें जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

- अरस्तु

बीते आठ सालों में छात्र-शिक्षक अनुपात में सुधार

छात्र-शिक्षक अनुपात में भी सुधार हुआ है। सुधार प्राथमिक स्तर से उच्च माध्यमिक सभी स्तरों पर हुआ है। उच्च माध्यमिक स्तर पर सुधार सबसे ज्यादा हुआ है। 2012-13 में 39.2 छात्रों पर एक शिक्षक था। वर्ष 2019-20 में यह स्थिति सुधरकर 26.1 छात्र पर एक शिक्षक की आ गई है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक-छात्र अनुपात घटकर 26.5 पर आ गया है, जो 2012 में 34 के आंकड़े पर था। उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्र शिक्षक अनुपात में सबसे कमजोर स्थिति ओडिशा में है। वहां हर एक शिक्षक पर 66.1 छात्र का बोझ है। इसके बाद बिहार का नंबर आता है, जहां एक शिक्षक पर 59.3 छात्रों का भार है। इसके उलट त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में प्रति शिक्षक 10 से कम छात्र हैं।

इतने छात्रों पर एक शिक्षक

स्तर	2012-13	2019-20
▪ प्राथमिक	34.0	26.5
▪ उच्च प्राथमिक	23.1	18.5
▪ माध्यमिक	29.7	18.5
▪ उच्च माध्यमिक	39.2	26.1

स्रोत-जिला शिक्षा सूचना प्रणाली प्लस (UDISE+) रिपोर्ट

भारतीय स्कूली शिक्षा- दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्था

शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में केरल सबसे अच्छा, बिहार सबसे खराब

नीति आयोग के अनुसार छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के मामले में सबसे अच्छा राज्य केरल है। आयोग के एसडीजी इंडेक्स में संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल के 17 संकेतकों पर प्रदर्शन के आधार पर राज्यों को 100 के पैमाने पर रैंक दी जाती है।

इस इंडेक्स में केरल को 100 में से 80 अंक मिले हैं। अंकों के आधार पर नीति आयोग ने राज्यों को श्रेणियों में वर्गीकृत किया है।

उच्चतम स्कोर वाले राज्य

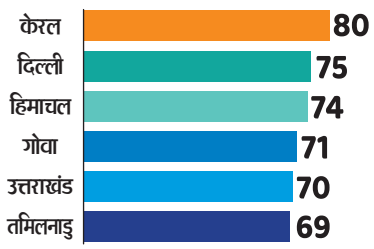

केंद्र शासित प्रदेशों में चंडीगढ़ को 79 और पुडुचेरी को 70 अंक मिले।

अन्य बड़े राज्यों की स्थिति

64 से कम अंक

परफॉर्मर श्रेणी में सबसे ज्यादा 64 अंक के साथ हरियाणा बड़ी आबादी वाला राज्य है। इस श्रेणी में सबसे कम अंक आंध्र प्रदेश के 50 हैं। कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल भी इसी श्रेणी में आते हैं।

49 से कम अंक

वाले राज्य एसपिरेंट श्रेणी में आते हैं। इन राज्यों को 49 से कम अंक मिले हैं- जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, मेघालय, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, असम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, बिहार।

भारतीय स्कूली शिक्षा- दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्था

4 राज्यों में ड्रॉपआउट दर 30 से अधिक सिर्फ तीन राज्यों में 10 से कम

आज भी देश में कई बच्चे आर्थिक तंगी के कारण या तो शिक्षा से वंचित हैं या पढ़ाई पूरी होने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर स्कूल छोड़ने की दर 16.1% से अधिक है, जबकि उच्च प्राथमिक (6 से 8) और प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने की दर क्रमशः 2.6% और 1.5% है। प्राथमिक स्तर की तुलना में माध्यमिक स्तर पर लड़कों में स्कूल छोड़ने की दर काफी अधिक है। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस या यूडीआईएसई+ 2019-20 की रिपोर्ट के मुताबिक करीब 30 फीसदी छात्र सेकेंडरी स्तर के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं और सीनियर सेकेंडरी लेवल की ओर नहीं बढ़ते हैं। रिपोर्ट से पता चला है कि 19 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ऐसे हैं, जहां माध्यमिक स्तर कक्षा 9वीं और दसवीं के स्तर पर स्कूल छोड़ने की दर अखिल भारतीय दर (17.3%) से काफी अधिक है। त्रिपुरा, सिक्किम, नागालैंड, मेघालय, मध्य प्रदेश, असम और अरुणाचल प्रदेश में ड्रॉपआउट दर 25% से अधिक है। चार राज्यों ने ड्रापआउट दर 30% से अधिक दर्ज की है।

नागालैंड, झारखंड और बिहार सबसे खराब

देश में मिजोरम, नागालैंड, झारखंड और बिहार ऐसे राज्य हैं, जहां बच्चों की ड्रॉप आउट दर 30 प्रतिशत से अधिक है। सबसे ज्यादा ड्रॉप आउट दर बिहार में 39.7 है। जबकि इस मामले में हिमाचल प्रदेश, अंडमान-निकोबार, पंजाब की स्थिति बेहतर कही जा सकती है, जहां बच्चों की ड्रॉप आउट दर 10 प्रतिशत से कम है। ड्रॉप आउट दर मध्यप्रदेश में 23.76%, गुजरात 24.08% में है। जबकि दक्षिण के राज्यों में तेलंगाना 22.49% और आंध्र प्रदेश 15.71% है।

लड़कियों का ड्रॉप आउट रेट लड़कों से कम

तुलनात्मक रूप से ये सेकेंडरी लेवल पर हाईएस्ट प्रमोशन दर वाले राज्य/केंद्र शासित प्रदेश भी हैं, जिनमें पंजाब, मणिपुर और केरल में 90% से अधिक प्रमोशन रेट हैं। लड़कियों की कुल स्कूल छोड़ने की दर लड़कों की तुलना में 2% कम है। पंजाब ने लड़कियों के लिए ड्रॉपआउट दर शून्य दर्ज की है, जबकि असम ने माध्यमिक स्तर पर उच्चतम ड्रॉपआउट दर (35.2) दर्ज की है।

सपने की शुरुआत उस शिक्षक के साथ होती है जो आप में यकीन करता है,

जो आपको खींचता है, धक्का देता है और आपको अगले पठार तक ले जाता है, कभी-कभार "सच" नामक तेज छड़ी से ढकेलते हुए।

- डैन रेथर

ड्रॉप आउट मामले में सबसे अच्छा हिमाचल, सबसे बुरी हालत बिहार में

नीति आयोग द्वारा जारी सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल की रिपोर्ट के मुताबिक ड्रॉप आउट के मामले में सबसे अच्छी स्थिति हिमाचल प्रदेश की है। यहां सिर्फ सात फीसदी बच्चे हर वर्ष स्कूल छोड़ रहे हैं। वहीं, बिहार की स्थिति सबसे ज्यादा खराब है, वहां हर वर्ष 39 फीसदी बच्चे स्कूल छोड़ रहे हैं।

राज्यों की ड्रॉप आउट दर

हिमाचल प्रदेश	7.03%	आंध्र प्रदेश	15.71%	कर्नाटक	26.18%
अंडमान निकोबार	7.36%	गोवा	16.01%	असम	27.6%
पंजाब	8.6%	मणिपुर	21.05%	मेघालय	28.07%
तमिलनाडु	10.03%	तेलंगाना	22.49%	ओडिशा	28.87%
दिल्ली	10.75%	मध्यप्रदेश	23.76%	अरुणाचलप्रदेश	29.93%
महाराष्ट्र	11.28%	गुजरात	24.08%	मिजोरम	30.67%
हरियाणा	12.16%	सिक्किम	24.15%	नागालैंड	31.28%
केरल	12.77%	छत्तीसगढ़	24.23%	झारखंड	36.64%
राजस्थान	15.19%	जम्मू कश्मीर	24.35%	बिहार	39.73%

भारतीय स्कूली शिक्षा- दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्था

बदली जरूरत: आर्ट्स वाले टेक्नोलॉजी व टेक्नोलॉजी वाले अर्थशास्त्र भी पढ़ें

अब जो छात्र 10वीं के बाद डिप्लोमा करना चाहते हैं वे डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग, आईटीआई वोकेशनल कोर्सेस, डिप्लोमा इन मेडिकल कोर्सेस, डिप्लोमा इन आईटी कर सकते हैं।

डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर साइंस, सर्टिफिकेट इन पॉल्ट्री फार्मिंग की पढ़ाई कर सकते हैं। ग्राफिक डिजाइन, ईवेंट मैनेजमेंट में शॉर्ट टर्म कोर्स किए जा सकते हैं। कॉलेजों में प्रवेश के लिए एक्स्ट्रा कॅरिकुलर एक्टिविटीज भी देखी जाने लगी हैं।

• **अभिषेक गुलाटी,** मैनेजर ग्रोथ स्ट्रैटजी एंड ग्लोबल एजुकेशन, माइंडलर

एक शिक्षक ही उम्मीद को प्रेरित कर सकता है, कल्पना को प्रज्वलित कर सकता है और सीखने के प्रति प्रेम पैदा कर सकता है।

•••••

शिक्षा व शिक्षक का काम सिर्फ खाली घड़े को भरना नहीं है, बल्कि बच्चे में सीखने की अग्नि जलाना है।

- ब्रैड हेनरी

••••••

आज से पांच साल पहले 12वीं में साइंस स्ट्रीम बेहतर मानी जाती थी। लेकिन आज एसटीईएएम- यानी साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथेमेटिक्स के साथ आर्ट्स का दौर है। आईआईटीज भी अब केवल टेक्नोलॉजी के भरोसे नहीं हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि केवल टेक्नोलॉजी नौकरी नहीं दिला सकती। अब आईआईटी-खड़गपुर, आईआईटी-कानपुर, बिट्स पिलानी जैसे संस्थानों ने टेक्नोलॉजी के साथ-साथ इकोनॉमिक्स भी पढ़ाना शुरू कर दिया है। पिछले सालों में इंजीनियरिंग और ह्यूमैनिटीज के छात्रों का सैलरी गैप भी कम हुआ है। आज एक एमएनसी में जॉब करने वाले इकोनॉमिक्स के स्टूडेंट को भी उतनी ही सैलरी मिलती है, जितनी कि इंजीनियरिंग के छात्र को। हालांकि 10वीं पास करने वाले और आर्ट्स चुनने वाले छात्र अगर केवल ह्यूमैनिटीज तक ही सीमित न रहें टेक्नोलॉजी के बारे में भी पढ़ें तो बेहतर होगा। आज सभी इंडस्ट्रीज की निर्भरता तकनीक पर है। उदाहरण के तौर पर फूड डिलिवर करने वाली कंपनी जोमैटो, एजुकेशन कंपनी बायजू और ऑनलाइन पेमेंट करने वाली पेटीएम भले ही टेक्नोलॉजी कंपनी नहीं हैं, लेकिन बिना तकनीक के ये संचालित नहीं हो सकती। इसलिए हर स्ट्रीम के स्टूडेंट को टेक्नोलॉजी के बारे में पता होना चाहिए।

बहुत से स्टूडेंट्स को नहीं पता कि 12वीं में चाहे कोई भी स्ट्रीम हो वे साथ में कंप्यूटर साइंस भी पढ़ सकते हैं। साथ ही सोशल मीडिया की समझ भी भविष्य की नौकरियों के लिए जरूरी है। 11वीं में विषय के चयन के साथ-साथ यह जरूरी है कि पता हो कि चुने गए विषय में क्या संभावनाएं हैं। उदाहरण के तौर पर साइंस से आप सिर्फ फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ्स या बायोलॉजी समझते हैं लेकिन साइकोलॉजी भी एक ऐसा विषय है जो साइंस व आर्ट्स दोनों में पढ़ाया जाता है और जिसमें कॅरिअर के अच्छे अवसर हैं। यहां काउंसलर या माइंड कोच बनने के अलावा क्रिमिनल साइकोलॉजी, फारेंसिक साइकोलॉजी जैसे टॉपिक हैं। इसके साथ ही अब छात्र अपनी पसंद के विषयों का कॉम्बिनेशन बनाकर पढ़ सकते हैं। उदाहरण के तौर पर

12वीं साइंस के ऑप्शन्स में किसी एक विषय और ह्यूमैनिटीज को मिलाकर पढ़ सकते हैं। एनईपी के बाद छात्रों को इसका फायदा मिल पाएगा। जो स्टूडेंट्स 10वीं के बाद डिप्लोमा करना चाहते हैं वे डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग, आईटीआई वोकेशनल कोर्सेस, डिप्लोमा इन मेडिकल कोर्सेस, डिप्लोमा इन आईटी कर सकते हैं। इसके अलावा वे डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर साइंस, सर्टिफिकेट इन पॉल्ट्री फार्मिंग की पढ़ाई कर सकते हैं। ग्राफिक डिजाइन, ईवेंट मैनेजमेंट में शॉर्ट टर्म कोर्स किए जा सकते हैं। यह भी याद रखें कि पहले केवल नंबर्स के आधार पर ही विश्वविद्यालयों में प्रवेश मिलता था लेकिन अब कॉलेजों में प्रवेश के लिए 10, 12वीं तक की एक्स्ट्रा कॅरिकुलर एक्टिविटीज भी देखी जाने लगी हैं। जैसे- अशोका यूनिवर्सिटी, अजीम प्रेमजी, ओपी जिंदल आदि विश्वविद्यालय केवल मार्क्स नहीं देखते। ऐसे में 90 या 95% प्रतिशत लाना ही जरूरी नहीं है, बल्कि एक्स्ट्रा कॅरिकुलर एक्टिविटीज भी जरूरी हैं।

उच्च शिक्षा की स्थिति

कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में 9 करोड़ छात्रों को पढ़ा रहे हैं 15 लाख शिक्षक

देश में 18 से 23 साल की उम्र के युवाओं की आबादी 14.2 करोड़ है, इनमें 9 करोड़ से ज्यादा उच्च शिक्षा में है। इन युवाओं को शिक्षित करने का जिम्मा 15 लाख 3 हजार शिक्षकों पर है। अकेले वर्ष 2019-20 में ही देश में कुल 3.8 करोड़ छात्रों ने उच्च शिक्षा के लिए कॉलेजों में नामांकन किया है। देखिए देश में कितना बड़ा है उच्च शिक्षा का ढांचा-

उच्च शिक्षा-जरूरत और स्थिति

18 से 23 साल के उम्र की आबादी (करोड़ में)

पुरुष	महिलाएं	कुल
7.3	6.9	14.2

साक्षरता दर (प्रतिशत में)

पुरुष	महिलाएं	कुल
82.1	65.4	74

उच्च शिक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन- (वर्ष 2019-20)

पुरुष	महिलाएं	कुल
1.96	1.88	3.85

10 आंकड़ों में समझिए देश में उच्च शिक्षा का ढांचा कितना बड़ा है

1043
विश्वविद्यालय और इंस्टीट्यूशन हैं देश में जो डिग्री प्रदान करते हैं।

42343
कुल कॉलेजों की संख्या है देश के विभिन्न राज्यों में।

10.75%
कॉलेज सिर्फ लड़कियों के लिए आरक्षित हैं देश के विभिन्न राज्यों में।

60.56%
कॉलेज ग्रामीण क्षेत्रों में हैं देश के अलग-अलग इलाकों में।

780
ऑटोनोमस कॉलेज हैं। वो कॉलेज जो अपने नियमों का पालन करते हैं।

110
डुअल मोड यूनिवर्सिटी, जो पारंपरिक और गैर-पारंपरिक तरीकों दोनों से शिक्षा देती हैं।

11779
स्टैंड अलोन इंस्टीट्यूशन। विवि से संबद्ध तो नहीं पर नियमित या मुक्त और दूरस्थ शिक्षा दे रहे हैं।

307
एफिलिएटिंग यूनिवर्सिटी, जो स्वतंत्र रूप से संचालित हैं।

49348
विदेशी छात्र में देश में पंजिकृत हैं और अलग-अलग कॉलेजों में पढ़ रहे हैं।

1503156
यह संख्या है देश में मौजूद शिक्षकों की (उच्च शिक्षा की स्थिति)

स्रोत- हायर एजुकेशन प्रोफाइल 2019-20, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन

उच्च शिक्षा की स्थिति

छात्राएं पोस्टग्रेजुएशन, एमफिल में और छात्र डिप्लोमा करने में आगे

देश में उच्च शिक्षा में पोस्ट ग्रेजुएशन और एमफिल करने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों से ज्यादा है। जबकि इंटिग्रेटेड, डिप्लोमा और पीएचडी करने के मामले में लड़कों की संख्या अधिक है।

उच्च शिक्षा के सभी कोर्सों में देश में लड़कियों की संख्या में काफी सुधार आया है। वर्ष 2015-2016 में जहां 100 छात्रों पर 86 छात्राएं हुआ करती थीं वहीं 2019-20 में 100 छात्रों पर अब 96 छात्राएं हो गई हैं।

पिछले पांच सालों में बीकॉम ही ऐसा स्ट्रीम था, जहां लड़कियों की भागीदारी कम थी। बीएससी में तो 2017-18 से ही जेंडर गैप लगभग खत्म हो चुका था। 2017-18 में बीएससी में प्रति सौ छात्र पर सौ छात्राएं थी, अब सिर्फ दो साल में ही बीएससी में प्रति सौ लड़कों पर 113 छात्राएं हो गई हैं। कई कोर्सों में जहां लड़कों की संख्या ज्यादा होती थी, वहां लड़कियों का अब प्रभाव बढ़ रहा है। कुल मिलाकर सभी कोर्सों में 2015-2016 में जहां सौ छात्रों पर 86 छात्राएं हुआ करती थीं वहीं 2019-20 में सौ छात्रों पर अब 96 लड़कियां हो गई हैं।

हालांकि तकनीकी क्षेत्र में आज भी लड़कियों की भागीदारी बहुत कम है। बीटेक प्रोग्राम में प्रत्येक साल सौ लड़कों पर सिर्फ 42 लड़कियां ही दाखिला लेती हैं। वहीं अंडरग्रेजुएट लॉ प्रोग्राम में प्रति सौ छात्रों पर 53 लड़कियां एडमिशन लेती हैं। एक ट्रेंड यह देखा गया है कि लड़कियां एमफिल, पोस्टग्रेजुएशन में ज्यादा जा रही हैं तो लड़कों की रुचि डिप्लोमा कोर्स और पीएचडी में अधिक है।

दुनिया के अच्छे शिक्षकों में कभी भी सही और गलत को लेकर कोई द्वंद्व नहीं होता।

उनमें तो विवाद इस बात को लेकर है कि दो सही में से ज्यादा सही कौन है। गलत की तो कोई चर्चा ही नहीं है।

-जॉर्ज विलियम हेगल

उच्च शिक्षा में 11 लाख एडमिशन अधिक हुए

2019-20 में उच्च शिक्षा में 3.85 करोड़ छात्रों ने एडमिशन लिया, जबकि 2018-19 में कुल 3.74 करोड़ छात्रों ने एडमिशन लिया था। यानी पिछले साल के मुकाबले उच्च शिक्षा में 11.36 लाख ज्यादा एडमिशन हुए। 3.04 प्रतिशत की वृद्धि। इसमें 79.5% अंडरग्रेजुएट कोर्स में दाखिल हुए हैं। इसके 11.2% छात्रों ने मास्टर कोर्स में दाखिला लिया। इंजीनियरिंग को छोड़कर सभी क्षेत्रों में स्टूडेंट्स के दाखिले में वृद्धि हुई। इंजीनियरिंग में पिछले साल की तुलना में इस साल 1.25 लाख छात्रों ने कम एडमिशन लिया। पिछले साल 38.5 लाख छात्रों ने इंजीनियरिंग में दाखिला लिया था, जबकि इस साल 37.2 लाख छात्रों ने दाखिला लिया।

कहां कितने छात्र पढ़ रहे हैं

कोर्स	लड़के	लड़कियां
पीएचडी	111444	91106
एमफिल	9043	14891
पोस्ट ग्रेजुएट	1860163	2452372
पीजी डिप्लोमा	116346	100903
ग्रेजुएट	15563077	15084210
डिप्लोमा	1740798	931764
सर्टिफिकेट	74164	85705
इंटिग्रेटेड	168712	131661

पद के अनुसार शिक्षक संख्या

पद	पुरुष	महिलाएं
प्रोफेसर और समकक्ष	101319	38478
रीडर और ऐसोसिएट प्रो.	100652	59485
लेक्चरर, असिसटेंट प्रो.	583231	440288
डेमोंसट्रेटर, ट्यूटर	27650	52522
टेम्प्रेरी टीचर्स	43387	41569
विजिटिंग टीचर्स	8098	6477

स्रोत- हायर एजुकेशन प्रोफाइल 2019-20, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन

उच्च शिक्षा की स्थिति

दिल्ली में प्रत्येक 1 लाख छात्रों के लिए केवल 8 और कर्नाटक में 59 कॉलेज

उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (एआईएसएचई) के अनुसार देश में प्रति एक लाख छात्रों पर औसत 30 कॉलेज हैं।

इस मामले में दक्षिण भारत के राज्यों में स्थिति बेहतर है। कर्नाटक (59), तेलंगाना (53) और आंध्र प्रदेश (51) में कॉलेजों का घनत्व अधिक है, अन्य प्रमुख राज्यों में इतना अच्छा प्रदर्शन नहीं है। दिल्ली, बिहार और पश्चिम बंगाल में निराशाजनक आंकड़े हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रति लाख जनसंख्या पर केवल आठ कॉलेज हैं, बिहार जैसे बड़े राज्य में प्रति लाख नागरिकों पर 7 कॉलेज ही हैं। झारखंड और पश्चिम बंगाल की स्थिति भी कोई खास अच्छी नहीं है। यहां प्रति लाख क्रमश: 8 और 13 कॉलेज हैं।

किस राज्य में प्रति एक लाख छात्रों पर कॉलेजों की संख्या

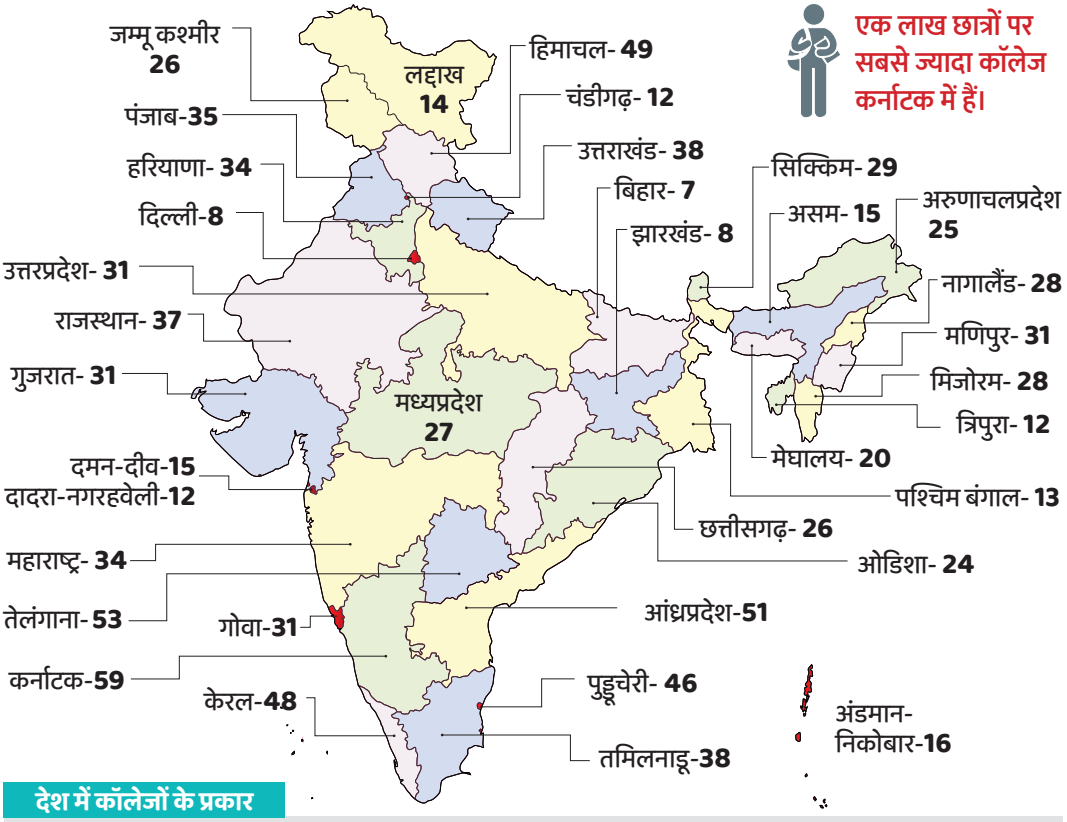

देश में कॉलेजों के प्रकार

- एफिलिएटेड- 41114
- रिकगनाइज्ड सेंटर्स- 1906
- पीजी सेंटर्स- 138
- यूनिवर्सिटीज कॉलेज- 1297

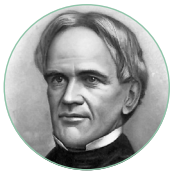

शिक्षक पढ़ाते हैं क्योंकि वो चिंता करते हैं।

युवाओं को पढ़ाकर वो अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। इसके लिए चाहिए बहुत सारा समय, धैर्य और चिंता।

•••••

जब शिक्षक पढ़ाता है तो कई लोग सीखते हैं और पूरा समाज विकसित होता है।

- होरेस मैन

••••••

उच्च शिक्षा की स्थिति

सबसे लोकप्रिय आर्ट्स, साइंस से दोगुने 93.49 लाख छात्र इसमें नामांकित

कहा तो यह जाता है कि भारतीय छात्रों और उनके माता-पिता की उच्च शिक्षा के मामले में पहली पसंद विज्ञान है। चिकित्सा या इंजीनियरिंग पर सबसे ज्यादा जोर रहता है।

लेकिन उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (एआईएसएचई) के नए आंकड़े कहते हैं कि कला विषय वास्तव में सबसे लोकप्रिय है। 2019 के सर्वेक्षण के अनुसार भारत में स्नातक स्तर पर कला पाठ्यक्रमों में 93.49 लाख छात्र नामांकित हैं, जो इसे सबसे लोकप्रिय बनाता है। इंजीनियरिंग और मेडिकल क्षेत्र में छात्रों का इनरोलमेंट चकित करता है, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी चौथा सबसे लोकप्रिय पाठ्यक्रम है। इसमें (38.52 लाख छात्र नामांकित हुए थे, जबकि मेडिकल पांचवें नंबर पर आता है, जिसमें 11.96 लाख छात्र नामांकित हुए थे। सबसे ज्यादा लोकप्रिय तो आर्ट ही है।

एक मास्टर आपको यह बताता है कि वो आपसे क्या उम्मीद करता है।

पर एक शिक्षक आपकी अपनी उम्मीदों को जगाता है।

•••••

हर शिक्षक अपने छात्रों का प्रतिबिंब होता है। वो खुद को अपने शिष्यों में विकसित होते हुए देखता है।

- पैट्रीशिया नील

••••••

किस क्षेत्र में कितने छात्र नामांकित- 2019

स्ट्रीमवाइज रेग्लुयर मोड में स्टूडेंट्स का रजिस्ट्रेशन (यूजी प्रोग्राम्स)

कोर्स	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20
▪ बीए	95,27060	92,99437	91,98205	94,87704
▪ बीएससी	49,78564	51,38250	50,43732	50,92515
▪ बीकॉम	34,84301	35,48572	35,71436	36,66311
▪ बीटेक	40,85321	39,40080	37,70949	36,44045
▪ बीएड	8,10914	10,14882	11,75517	13,16648
▪ बीसीए	4,15007	4,32382	4,46680	4,63625
▪ बीबीए	3,83827	4,24785	4,76169	5,28740
▪ एलएलएम	2,05402	3,38716	3,62493	3,95985
▪ एमबीबीएस	2,11366	2,41601	2,67197	2,87776
▪ बीफार्मा	3,13776	2,25457	2,46358	2,93822

लॉ में 1.90 लाख छात्र बढ़े, बीबीए, एलएलएम जैसे कोर्सेस में भी छात्रों का रुझान ज्यादा

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन 2019-20 के पिछले सालों के आंकड़ों का एनालिसिस किया जाए तो इंजीनियरिंग स्ट्रीम में छात्रों की संख्या नहीं बढ़ रही है। वहीं लॉ में 1.90 लाख छात्र बढ़े हैं। अंडर ग्रेजुएट कोर्सेज में बीए व बीटेक में छात्रों का एनरोलमेंट कम हुआ है। पीजी प्रोग्राम्स में सभी कोर्सेज में एनरोलमेंट बढ़ रहा है।

पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्स में हर स्ट्रीम में बढ़ रहा नामांकन

बीए व बीटेक में यूजी में एनरोलमेंट कम हो रहा है, लेकिन पीजी में दोनों ही स्ट्रीम में एनरोलमेंट बढ़ रहा है। टेक्निकल कोर्स बीटेक में करीब चार लाख स्टूडेंट्स का एनरोलमेंट कम हुआ है, लेकिन एमटेक में दस हजार छात्र बढ़े हैं। साल 2016-17 में आठ लाख स्टूडेंट्स बीएड में एनरोल थे, बढ़ते टीचिंग जॉब्स की वजह से आंकड़ा 2019-20 में बढ़कर 14 लाख तक पहुंच गया। इंजीनियरिंग में प्लेसमेंट नहीं मिलने के कारण एनरोलमेंट 40 लाख से गिरकर 36 लाख पर पहुंच गया।

उच्च शिक्षा की स्थिति

साइकोलॉजी और एनवायरमेंट जैसे नए विकल्प उभर रहे हैं

अब वह समय नहीं रहा जब 12वीं के बाद इंजीनियर, डॉक्टर, आईएएस, टीचर, वकील के बाद कॅरिअर के ऑप्शंस कम होने लगे। अब भविष्य केवल मेडिकल और इंजीनियरिंग तक ही सीमित नहीं है। बल्कि हर फील्ड को एक दूसरे की जरूरत है।

उदाहरण के तौर पर गूगल को लेते हैं। मैप बोलते हुए आपको रास्ता दिखाता है। यह सब काम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है। इसकी कोडिंग के लिए कंप्यूटर साइंस के छात्र की जरूरत होती है। आवाज के लिए अनुवादकों की जरूरत पड़ती है। आवाज रोबोट जैसी न लगे इसके लिए साइकोलॉजिस्ट की आवश्यकता होती है। आज सभी क्षेत्रों की निर्भरता एक-दूसरे पर है।

• **शिल्पा सिंह,** हेड स्टूडेंट एंगेजमेंट, माइंडलर

जिन्हें अपनी शिक्षा याद है उन्हें केवल अपने शिक्षक याद रहते हैं,

पढ़ाई की तकनीक और तरीके नहीं। किसी भी शिक्षा व्यवस्था का दिल होते हैं शिक्षक।

.....

महत्व शिक्षक का होता है, क्लासरूम का नहीं।

- सिडनी हुक

••••••

आर्ट्स में कौन-से अवसर उपलब्ध

आर्ट्स के छात्रों की संख्या देश में सबसे अधिक है। होटल मैनेजमेंट, जर्नलिज्म, ईवेंट मैनेजमेंट, पब्लिक रिलेशंस जैसे क्षेत्रों ने ह्यूमैनिटीज के स्टूडेंट्स के लिए बेहतरीन अवसर तैयार किए हैं। यह धारणा टूटी है कि कमजोर छात्र ही ह्यूमैनिटीज चुनते हैं। पिछले दो तीन सालों से सीबीएसई बोर्ड का रिजल्ट देखें तो टॉपर्स ह्यूमैनिटीज से ही रहे हैं। कॅरिअर ऑप्शंस की बात करें तो कोरोना महामारी के बाद सबसे अधिक मेंटल हेल्थ पर बात हो रही है। कंपनियां अपनी पॉलिसी बदल रही हैं। कंपनियां साइकोलॉजी के प्रोफेशनल्स को हायर कर रही हैं जो उनके स्टाफ की काउंसलिंग कर सकें। जेंडर स्टडीज पर काम हो रहा है। साथ ही महामारी के बाद सबसे अधिक रिसर्चर की जरूरत पड़ने वाली है। सरकारी और निजी संस्थाओं को नए सिरे से पॉलिसी मेकिंग के लिए रिसर्चर की आवश्यकता पड़ेगी। राजनीतिक पार्टियों को भी नए सिरे से मतदाताओं को समझना पड़ेगा। ऐसे में सोशियोलॉजी, साइकोलॉजी, पॉलिटिकल साइंस, इकोनॉमिक्स, मास कॉम, सोशल वर्क आदि के छात्रों की मांग बढ़ेगी। लॉ के छात्रों के लिए इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी, साइबर सिक्योरिटी, स्पेशल लॉ, एनवायरनमेंटल लॉ आदि क्षेत्रों में कॅरिअर के ऑप्शन बढ़ेंगे।

कॉमर्स में काम के मौके

कॉमर्स के छात्रों को भी मल्टीडिसीप्लिनरी बनना पड़ेगा, क्योंकि आज के समय में कॉमर्स का छात्र यह नहीं कह सकता कि मैं सिर्फ अकाउंट्स का काम करूंगा, मुझे नहीं फर्क पड़ता कि मार्केटिंग वाले क्या कर रहे हैं। उसे हर काम थोड़ा-थोड़ा सीखना पड़ेगा। यह एक ऐसी स्ट्रीम है जिसे छात्र आर्ट्स व साइंस के बाद सबसे अधिक पसंद करते हैं। यहां भी छात्रों के लिए कॅरिअर के कई दरवाजे खुल चुके हैं। सीए, सीएस के अलावा जो क्षेत्र अभी सबसे अधिक ग्रो कर रहे हैं वे हैं डिजिटल मार्केटिंग, बिजनेस एनालिटिक्स, फिनटेक आदि। इन सबके लिए कॉमर्स की पढ़ाई के साथ अगर क्रिएटिव राइटिंग व सोशल मीडिया की समझ है तो ज्यादा जल्दी तरक्की मिलेगी। साथ ही प्रिंट मीडिया व टेलीविजन मीडिया में बिजनेस बीट के लिए उन छात्रों को प्राथमिकता दी जाती है जिनका बैकग्राउंड कॉमर्स व इकोनॉमिक्स का रहा हो।

साइंस व टेक्नोलॉजी में स्कोप

एक समय था छात्र सोचते थे कि पीसीएम यानी फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स पढ़ी है तो इंजीनियर और पीसीबी यानी फिजिक्स, केमिस्ट्री व बायोलॉजी पढ़ी है तो डॉक्टर बनना है। लेकिन आज ऐसा नहीं है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में डेटा साइंस एंड एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन, मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स आदि ने कई ऑप्शन खोल दिए हैं। एथिकल हैकिंग भी तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है, क्योंकि कंपनियों को डेटा की सुरक्षा के लिए एथिकल हैकर्स को हायर करना पड़ता है। बायोलॉजी के छात्रों के लिए फार्माकोलॉजी, यूरोलॉजी, एपिडेमियोलॉजी आदि उभरते हुए क्षेत्र हैं। आने वाले समय में डेटा साइंस, रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में भी नौकरियां बढ़ेंगी। ऐसे ही बीएससी मैथ्स के छात्र टेक्नोलॉजी के साथ पारंपरिक क्षेत्रों से अलग भी कॅरिअर बना सकते हैं। जैसे स्टेटेस्टीशियन, साइंटिफिक असिस्टेंट, टेक्निकल राइटर आदि।

देश में तकनीकी और प्रोफेशनल शिक्षा

कुल 10 हजार संस्थान, इनमें 16 लाख से ज्यादा छात्र हर वर्ष दाखिला लेते हैं

तकनीकी और मैनेजमेंट जैसी प्रोफेशनल शिक्षा के मामले में भले ही देश में आईआईटी और आईआईएम जैसे सरकारी संस्थानों का नाम लिया जाता हो, लेकिन युवाओं को तकनीकी शिक्षा देने के मामले में सरकारी संस्थानों की संख्या काफी कम है।

अभी भी इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट जैसे तकनीकी और प्रोफेशनल कोर्सेज के लिए छात्रों को निजी संस्थानों पर निर्भर रहना पड़ता है। देश में जहां तकनीकी और प्रोफेशनल कोर्स के लिए सरकारी संस्थानों की संख्या 1959 है, वहीं निजी संस्थानों की संख्या 7400 से ज्यादा है। सरकारी संस्थानों में जहां 3.20 लाख छात्र हैं। निजी संस्थानों में 12 लाख से ज्यादा हैं।

इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी से जुड़े कोर्स की मांग ज्यादा

देश में तकनीकी और प्रोफेशनल कोर्स के लगभग दस हजार संस्थान हैं। वर्तमान में एआईसीटीई के आंकड़ों के अनुसार इनमें लभभग 16 लाख से अधिक छात्र पढ़ रहे हैं। सरकारी तकनीकी संस्थानों में लगभग 4.7 लाख सीट्स हैं। जबकि निजी संस्थानों में यह संख्या 25.21 लाख है। यानी पांच गुना से ज्यादा। तकनीकी और प्रोफेशनल शिक्षा के मामले में देश में अभी भी इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी से जुड़े कोर्स ही ज्यादा पसंद किए जा रहे हैं। मैनेजमेंट दूसरे क्रम पर और फार्मेसी तीसरे नंबर पर हैं। इसमें भी आईटी और कंप्यूटर्स से जुड़े कोर्स की मांग सबसे ज्यादा है।

टॉप 3 तकनीकी प्रोग्राम

6164	3069	2705
इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी	मैनेजमेंट कोर्स	फार्मेसी कोर्स

तकनीकी और प्रोफेशनल कोर्स

16,44,588	10,000	558837
छात्रों की संख्या	संस्थान हैं लगभग	कुल फैकल्टी

मेरी टीचर ने मुझे कैंडी देकर पढ़ना-लिखना सिखाया।

हैरान करने वाली बात ये है कि एक लंबे अरसे पहले ही मैं उनकी बहुत इज्जत करने लगा और मेरे अंदर सीखने की ललक पैदा हो गई।

- स्टीव जॉब्स

देश में तकनीकी और प्रोफेशनल शिक्षा

एआई व डेटा साइंस आने के बाद भी छात्रों का रुझान कंप्यूटर साइंस में

इंजीनियरिंग में पिछले कुछ सालों से एआई, डेटा साइंस जैसी नई ब्रांच उभर कर सामने आई हैं। इसके बाद भी कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग में छात्रों का रुझान बरकरार है।

एयरोनॉटिक्स और माइनिंग में छात्रों की दिलचस्पी कम हो रही है। प्रोफेशनल की जगह अभी भी कोर ब्रांचों का क्रेज बना हुआ है। पिछले तीन सालों में कंप्यूटर साइंस ब्रांच में कुल 8.36 लाख स्टूडेंट्स एनरोल थे, जिनकी संख्या बढ़कर 9.32 लाख तक पहुंच गई है। वहीं मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और सिविल ब्रांच में कमी आ रही है।

एक औसत दर्जे का शिक्षक बताता है। एक अच्छा शिक्षक समझाता है।

एक बेहतर शिक्षक कर के दिखाता है पर महान शिक्षक प्रेरित करता है।

.....

बच्चे को पढ़ना सिखाना अच्छी शिक्षा है, क्या पढ़ना है यह बताना श्रेष्ठ शिक्षा है।

- विलियम आर्थर वार्ड

.....

इंजीनियरिंग की ब्रांचों में तीन साल का ट्रेंड

कंप्यूटर साइंस

साल	मेल	फीमेल	कुल
2020	5.78	3.56	9.32
2019	5.27	3.53	8.80
2018	4.83	3.52	8.36

मैकेनिकल

2020	6.44	.40	6.84
2019	7.42	.40	7.82
2018	8.39	.42	8.81

इलेक्ट्रॉनिक्स

2020	3.56	2.54	6.11
2019	3.58	2.72	6.31
2018	3.64	2.91	6.56

सिविल

2020	3.75	1.09	4.84
2019	4.20	1.16	5.36
2018	4.71	1.24	5.95

इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी

2020	1.22	.78	2.00
2019	1.10	.77	1.87
2018	1.05	.79	1.84

(नोट : संख्या लाखों में)

ये हैं नई ब्रांचों की स्थिति

मरीन इंजीनियरिंग में छात्रों की रुचि बढ़ी है जबकि माइनिंग में लगातार कमी आ रही है। एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में उतार-चढ़ाव बना हुआ है।

एयरोनॉटिकल

साल	मेल	फीमेल	कुल
2020	14284	4410	18694
2019	13264	3722	16986
2018	13329	3742	17071

माइनिंग इंजीनियरिंग

साल	मेल	फीमेल	कुल
2020	6692	336	7028
2019	7412	224	7636
2018	7672	163	7835

मरीन इंजीनियरिंग

साल	मेल	फीमेल	कुल
2020	4972	374	5346
2019	3944	254	4198
2018	3244	132	3376

देश में तकनीकी और प्रोफेशनल शिक्षा

देश की 48% मेडिकल सीटें सिर्फ महाराष्ट्र और दक्षिण के 6 राज्यों में

562 मेडिकल कॉलेज में तैयार होते हैं 1.25 लाख से ज्यादा डॉक्टर

स्वास्थ्य संस्थानों के मामले में दक्षिण के छह राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेश- आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पुड्डुचेरी के साथ महाराष्ट्र ने दबदबा कायम कर रखा है। देश में कुल 83 हजार से अधिक एमबीबीएस की सीटें हैं

इन सात राज्यों में देश की कुल स्वीकृत एमबीबीएस सीटों का 48 प्रतिशत हिस्सा है। देश के कुल 562 मेडिकल कॉलेजों में से 276 निजी क्षेत्र के हैं। खास बात यह है कि इन निजी कॉलेजों में से 165 तो इन सात राज्यों में ही स्थित हैं। बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे हिंदी भाषी राज्यों की लगभग पैंसठ करोड़ आबादी पर एमबीबीएस सीटों की उपलब्धता केवल 30 फीसदी है। यहां एमबीबीएस की कुल सीटें 25325 हैं। इन राज्यों में कुल 176 मेडिकल कॉलेज हैं, जिनमें 72 निजी और 104 सरकारी क्षेत्र के हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य विकास के मामले में भी आगे दिखते हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्र जहां स्वास्थ्य शिक्षा पिछड़ी है, वे विकास के मामले में भी काफी पीछे हैं।

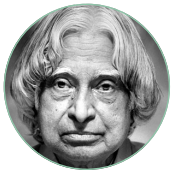

अच्छा शिक्षक वह है जो बच्चों को प्यार करता है तथा पढ़ाने में उसे आनंद आता है।

उसे औसत विद्यार्थी को प्रदर्शन सुधारने में मदद करनी चाहिए, उसे अपने व्यवसाय को एक लक्ष्य की तरह लेना चाहिए, जिसमें वह किसी विद्यार्थी को केवल पढ़ाता ही नहीं हो बल्कि वह एक समझदार नागरिक पैदा कर रहा हो जो भविष्य में देश में परिवर्तन लाने वाला हो।

-एपीजे अब्दुल कलाम

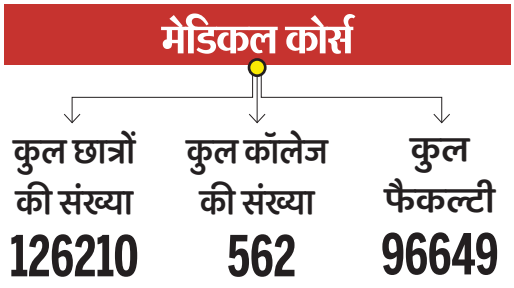

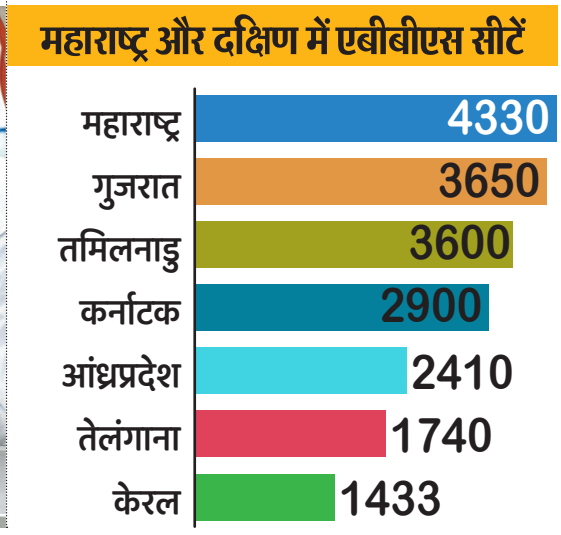

प्रतियोगी परीक्षाएं

देश की पांच सबसे कठिन परीक्षाएं 20% को भी नहीं मिलती सफलता

जीनियरिंग, मैनेजमेंट और लॉ के सबसे बड़े कॉलेजों में प्रवेश और प्रशासनिक सेवाओं के लिए आयोजित 5 सबसे कठिन परीक्षाओं में 20% छात्र भी सफल नहीं हो पाते हैं।

इन परीक्षाओं में सबसे कठिन यूपीएससी मानी जाती है। यहां लगभग 800 सीटों के लिए 30 लाख कैंडिडेट हर साल आवेदन करते हैं। यानी इस प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी में शामिल होने के लिए जितने अभ्यर्थी कोशिश करते हैं उनमें से सिर्फ 0.026% अभ्यर्थी ही सफल हो पाते हैं।

1) संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी)

देश भर में हुए सर्वे और विशेषज्ञों के अनुसार तीन चरणों में होने वाली संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा देश में होने वाली सबसे कठिन परीक्षा मानी जाती है। **इसमें लगभग 800 सीटों के लिए हर साल 30 लाख से ज्यादा कैंडिडेट आवेदन कराते हैं।**

2) कॉमन एडमिशन टेस्ट (कैट)

देश के प्रतिष्ठित बिजनेस स्कूलों इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में दाखिला के लिए **हर साल सवा दो लाख से ज्यादा परीक्षार्थी आवेदन करते हैं। इनके लिए केवल 5000 सीट हैं।**

3) ज्वॉइंट एंट्रेस एग्जामिनेशन (जेईई)

प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान आईआईटी की 16053 सीटों के लिए हर साल **लगभग 15 लाख स्टूडेंट्स आवेदन करते हैं। लगभग 45 कैंडिडेट्स में से एक का इस परीक्षा में चयन होता है।**

4) ग्रेजुएट एप्टीट्यूट टेस्ट इन इंजी. (गेट)

इंजीनियरिंग, तकनीक और विज्ञान के क्षेत्र में उच्च शिक्षा व अन्य सरकारी स्कॉलरशिप के लिए यह परीक्षा आयोजित की जाती है। इसमें हर साल लगभग **7 लाख आवेदन आते हैं जिसमें 17.8% को सफलता मिलती है।**

5) कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट (क्लैट)

कानून की पढ़ाई के लिए 23 नेशनल लॉ यूनि. सहित कुछ संस्थाओं में प्रवेश के लिए यह परीक्षा आयोजित की जाती है। **2500 सीट के लिए 75000 से ज्यादा आवेदन 2020 में मिले।**

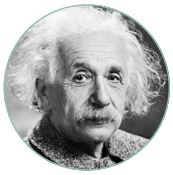

मैं अपने छात्रों को कभी पढ़ाता नहीं हूं, मैं केवल उन्हें अनुकूल माहौल देता हूं जिसमें वो सीख सकते हैं।

•••••

अपने छात्रों में सृजनात्मक भाव और ज्ञान का आनंद जगाना एक शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण है।

- अल्बर्ट आइंस्टाइन

••••••

प्रतियोगी परीक्षाएं- मेडिकल

मेडिकल में लड़कियों का रुझान ज्यादा, नीट क्रैक करने में भी आगे

देश में डॉक्टरी पढ़ने के मामले में लड़कियां, लड़कों से आगे हैं। नीट 2020 प्रवेश परीक्षा में लगभग 16 लाख विद्यार्थी शामिल हुए। परीक्षा के लिए 8.80 लाख छात्राओं ने पंजीकरण कराया।

परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या 7.16 लाख रही। ट्रेंड देखें तो मेडिकल में प्रवेश के लिए क्वालिफाई करने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों से अधिक रही है।

मैं किसी को कुछ सिखा नहीं सकता, मैं तो केवल लोगों को सोचने पर मजबूर करता हूं।

शिक्षक युवाओं को पढ़ाकर अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। इसके लिए चाहिए बहुत सारा समय, धैर्य और चिंता।

- सुकरात

▪ हर साल 15 लाख से ज्यादा विद्यार्थी देते हैं परीक्षा

देश भर के विभिन्न सरकारी और निजी मेडिकल संस्थानों में उपलब्ध एमबीबीएस, बीडीएस, आयुष, बीवीएससी और एएच प्रोग्राम की सीटों पर प्रवेश के लिए नीट (NEET- National Eligibility Cum Entrance Test) की परीक्षा आयोजित की जाती है। स्नातक स्तर के कोर्स के लिए आयोजित की जाने वाली यह परीक्षा नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित की जाती है। मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया और डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया की मंजूरी से देश भर में चल रहे 542 मेडिकल और 313 डेंटल कॉलेज के पाठ्यक्रमों में प्रवेश इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर होता है। हर साल आयोजित परीक्षा में लगभग 15 से 16 लाख छात्र शामिल होते हैं। नीट 2020 में आयोजित प्रवेश परीक्षा में लगभग 8.80 लाख छात्राओं ने पंजीकरण कराया। वहीं परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या 7.16 लाख रही। इसमें से उपस्थित हुए कैंडिडेट्स में 4.27 लाख छात्राएं एवं 3.43 लाख छात्र क्वालीफाई हुए। विशेषज्ञों के अनुसार टीचिंग के बाद मेडिकल वह लाइन है, जिसमें छात्राएं ज्यादा रुचि ले रही हैं। कॅरिअर के लिहाज से भी यह उन्हें मुफीद लगता है।

नीट में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या

साल	पंजीकृत छात्र	उपस्थित	अनुपस्थित
2019	15,19,375	14,10,755	1,08,620
2020	15,97,435	13,66,945	2,30,490

नीट में लड़के-लड़कियां और सीटें

	लड़के	लड़कियां
साल 2019		
▪ पंजीकृत	6,80,414	8,38,955
▪ उपस्थित	6,30,283	7,80,467
▪ क्वालीफाइड	3,51,278	4,45,761
साल 2020		
▪ पंजीकृत	7,16,586	8,80,843
▪ उपस्थित	6,18,075	7,48,866
▪ क्वालीफाइड	3,43,556	4,27,943

83075 एमबीबीएस

26949 बीडीएस

52270 आयुष

525 बीवीएससी एवं एएच

प्रतियोगी परीक्षाएं- इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट

इंजीनियरिंग : 17 लाख परीक्षार्थी आईआईटी की केवल 16 हजार सीटें

आईआईटी में प्रवेश के लिए साल 2020-21 में आयोजित की गई जेईई की परीक्षा में लगभग 17 लाख परीक्षार्थी शामिल हुए। वहीं आईआईएम में प्रवेश के लिए आयोजित की जाने वाली कैट परीक्षा में लगभग 1.90 लाख छात्रों ने परीक्षा दी।

इस तरह इन दो परीक्षाओं के लिए लगभग 19 लाख छात्रों ने परीक्षा दी। वहीं इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट के लिए राज्य स्तर पर भी परीक्षाओं में लाखों छात्रों ने भागीदारी की।

जेईई की परीक्षा में 3 साल में आवेदन

साल	आवेदक
2020	**17,79,534**
2019	**18,65,939**
2018	**12,59,000**

आईआईटी की कुल सीटें
16053

- आईआईएम की कुल सीटें : **5100**

लगभग 1.90 लाख छात्र परीक्षा देते हैं।

आप वाकई में कुछ सीखना चाहते हैं तो दूर देशों की यात्रा करें।

इससे अच्छा शिक्षक दूसरा कुछ नहीं हो सकता है। शिक्षक के कर्तव्य न छोटे होते हैं, न कम होते हैं, बल्कि वे मन को ऊंचा करते हैं और चरित्र को ऊर्जा देते हैं।

-चार्ल्स डारविन

मैनेजमेंट : तीन स्तर पर प्रवेश परीक्षा, हर साल लाखों परीक्षार्थी

मैनेजमेंट कोर्स में प्रवेश के लिए तीन स्तर पर परीक्षाएं आयोजित कराई जाती हैं। इनमें पहली है राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली परीक्षाएं। इनमें कैट, एनमैट, स्नैप, मैट, जैट, सीमैट, एटीएमए जैसी परीक्षाएं प्रमुख हैं। साल 2020 में कैट की परीक्षा में लगभग 1.90 लाख कैंडिडेट्स शामिल हुए थे। ऐसे ही दूसरी हैं राज्य स्तर पर आयोजित की जाने वाली परीक्षाएं। इनमें एमएएच एमबीए सीईटी (महाराष्ट्र), टीएसआईसीईटी (तेलंगाना), टीएएनसीईटी (तमिलनाडु), कर्नाटक पीजीसीईटी और केमैट (कर्नाटक) आयोजित की जाती हैं। इसके अलावा कई संस्थान उनके द्वारा संचालित किए जाने वाले मैनेजमेंट कोर्स में प्रवेश के लिए स्वयं की परीक्षा आयोजित कराते हैं। इनमें आईआईएफटी, टीआईएसएसएनईटी, केआईटीईई मैनेजमेंट और एमआईसीएटी जैसी परीक्षाएं प्रमख हैं।

इंजीनियरिंग: जेईई में शामिल हो रहे 17 लाख से अधिक छात्र

इंजीनियर बनने के लिए देश में छात्रों के पास मुख्य रूप से दो रास्ते हैं। पहला ज्वॉइंट एंट्रेंस एग्जाम यानी जेईई व दूसरा स्टेट इंजीनियरिंग एग्जाम। जेईई से देश के प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान आईआईटी, एनआईटी सहित विभिन्न संस्थानों में प्रवेश मिलता है। परीक्षा के दो चरण होते हैं। पहले चरण को जेईई मेन और दूसरे को जेईई एडवांस कहा जाता है। एडवांस परीक्षा के नतीजों के आधार पर आईआईटी में प्रवेश मिलता है। वहीं स्टेट एग्जाम के रूप में यूपीटीयूईई, बीसीईसीई- बिहार, केसीईटी- कर्नाटक कॉमन एंट्रेंस टेस्ट, पेट- मध्य प्रदेश, सीएपी- महाराष्ट्र, दिल्ली- सीईई, जेम- पं. बंगाल, सीईईटी- हरियाणा, सीईटी- पंजाब आदि प्रमुख हैं।

प्रतियोगी परीक्षाएं- यूपीएससी और एसएससी

20 से अधिक परीक्षाएं, हर साल डेढ़ करोड़ से ज्यादा अभ्यर्थी

यू

पीएससी द्वारा वर्ष 2019-20 में जारी की गई वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 30 लाख कैंडिडेट्स आयोजित की गई विभिन्न परीक्षाओं में शामिल हुए।

ऐसे ही एसएससी द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार एक वर्ष में आयोजित की गई लगभग 11 परीक्षाओं में लगभग एक करोड़ से अधिक कैंडिडेट्स शामिल हुए। इस तरह स्टूडेंट्स के लिए सरकारी नौकरी पाने का यह बड़ा जरिया है।

शिक्षक दो तरह के होते हैं

एक, जो आपको डरा धमका कर रखते है और दूसरे वो, जो आपको थोड़ा सा पीछे से थपथपा देते हैं और आप आसमान छू लेते हैं।

.....

समझ का सर्वोच्च रूप है पढ़ाना।

रॉबर्ट फ्रोस्ट

.....

यूपीएससी

आईएएस, आईपीएस के अलावा केंद्र सरकार के विभिन्न संस्थानों में भर्ती के लिए यूपीएससी लगभग 10 से अधिक परीक्षाएं आयोजित करता है। इनमें हर साल लगभग 30 लाख से ज्यादा परीक्षार्थी आवेदन करते हैं। मूलतः सभी संस्थानों में क्लास-1 के पदों के साथ क्लास-2 और 3 की परीक्षाएं भी यूपीएससी के द्वारा ली जाती हैं। इनमें मुख्य रूप से सिविल सर्विस परीक्षा, इंजीनियरिंग, कंबाइंड मेडिकल सर्विस, कम्बाइंड डिफेंस सर्विस, नेशनल डिफेंस एकेडमी, इंडियन नेवल एकेडमी, स्पेशल क्लास रेलवे अपरेंटिस, इंडियन फॉरेस्ट सर्विस, कम्बाइंड जियो साइंटिस्ट, जियोलॉजिस्ट एवं सेंट्रल आर्म्ड पुलस फोर्स की परीक्षा आयोजित की जाती है।

यूपीएससी ने साल 2019-20 में कुल 15 परीक्षाएं कराईं

पिछले तीन साल में यूपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा में आवेदनों की संख्या

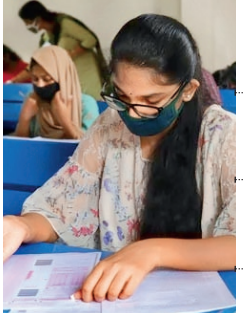

साल	आवेदन
2017-18	29,90,071
2018-19	30,35,783
2019-20	30,41,246

एसएससी

केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों और मंत्रालयों में अधिकारियों और लिपिकों की भर्ती के लिए स्टाफ सलेक्शन कमीशन (एसएससी) द्वारा एक साल में लगभग 10 परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। इनमें दो सबसे बड़ी परीक्षाएं एसएससी सीजीएल और एसएससी सीएचएसएल हैं। इसमें से एक अधिकारी और दूसरी लिपिक संवर्ग की है। इसके अलावा एसएससी जेई, एसएससी जेएचटी, एसएससी जीडी कॉन्स्टेबल, एसएससी सीपीओ, एसएससी स्टेनोग्राफर, एसएससी सलेक्शन पोस्ट, एसएससी एमटीएस और एसएससी साइंटिफिक असिस्टेंट की परीक्षा मुख्य रूप से शामिल हैं। एसएससी सीजीएल और एसएससी सीएसएचएल की परीक्षा हर साल होती है।

2017-18 में 55 लाख से ज्यादा ने दी परीक्षा

पिछले तीन साल में यूपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षा में आवेदनों की संख्या

एसएससी द्वारा 2017-18 में आयोजित 11 परीक्षाओं में

1,37,20,938

कैंडिडेट्स ने पंजीकरण कराया जबकि

55,69,270

कैंडिडेट्स परीक्षा में शामिल हुए।

प्रतियोगी परीक्षाएं- रेलवे और बैंकिंग

सबसे बड़ी परीक्षा : रेलवे और बैंकिंग में शामिल हुए 3 करोड़ छात्र

साल 2018 में रेलवे ने सहायक लोको पायलट और तकनीशियन के लगभग 64,371 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन मंगवाए थे, इसमें देश भर से लगभग 2.44 करोड़ अभ्यर्थी ने आवेदन किया था। यह अपने आप में अनूठा रिकॉर्ड है।

इसी साल बैंकिंग सेक्टर में आयोजित की गई भर्ती परीक्षाओं में लगभग 25 लाख से अधिक छात्रों ने आवेदन किए थे। रेलवे द्वारा आयोजित की गई परीक्षा दुनिया की सबसे बड़ी परीक्षा थी। वहीं दोनों परीक्षाओं को मिलाकर लगभग 3 करोड़ अभ्यर्थी परीक्षाओं में शामिल हुए थे।

वह शिक्षक वास्तव में बुद्धिमान है

जो आपको उसकी अपनी बुद्धि के घर में प्रवेश करने के लिए नहीं बल्कि आपको दिमाग की दहलीज पर ले जाता है।

.....

आज को याद रखना सबसे अच्छी शिक्षा है और कल का इंतजार करना सबसे बड़ी उम्मीद है।

-खलील जिब्रान

••••••

रेलवे कर्मचारियों की भर्ती 21 रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड के माध्यम से होती है

सरकारी नौकरी के मामले में आज भी रेलवे में नौकरी करना छात्रों का बड़ा सपना है। यहां लगभग 14 लाख कर्मचारी काम करते हैं। अधिकारी यानी ग्रुए और बी : की भर्ती सिविल सर्विस एग्जाम, इंजीनियरिंग सर्विस एग्जाम/ कंबाइंड मेडिकल एग्जाम की परीक्षा के माध्यम से होती है। ये परीक्षाएं यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) द्वारा आयोजित की जाती हैं। रेलवे में अमूमन ग्रुब के पद ग्रुप सी के पदों को प्रमोट कर भरे जाते हैं।

ग्रुप सी और डी : ग्रुप सी और डी के पद नॉन-गैजेटेड सबऑर्डिनेट पद के अंतर्गत आते हैं। इनकी भर्ती 21 रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड की ओर से पूरे साल आयोजित की जाती है। इनमें सहायक स्टेशन मास्टर, गार्ड्स, क्लर्क, टिकट कलेक्टर, ट्रैफिक अप्रेंटिस, स्टेनोग्राफर, कैटरिंग मैनेजर हेल्पर, खलासी, ट्रॉलीमैन, ट्रैकमैन आदि के पद आते हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी परीक्षा

साल

2018

पद सहायक लोको पायलट (एएलपी) और तकनीशियन

64,371

आवेदन लगभग

2.44 करोड़

बैंकिंग 4 प्रमुख परीक्षाएं, हर साल 25 लाख से ज्यादा छात्र तलाशते हैं भविष्य

बैंकों के विभिन्न पदों में भर्ती के लिए देश भर में मुख्यतः 4 परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। मुख्य है बैंक पीओ अर्थात प्रोबेशनरी ऑफिसर, दूसरी परीक्षा क्लर्क ग्रेड के विभिन्न पद जैसे कि कैशियर कम क्लर्क, कैशियर, टाइपिस्ट, स्टेनो, डेटा एंट्री ऑपरेटर और टेलीफोन ऑपरेटर जैसे पद होते हैं। यह परीक्षा इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सनल सलेक्शन (आईबीपीएस) द्वारा ली जाती है। देश के अधिकांश बैंक इसी परीक्षा के

माध्यम से कैंडिडेट्स का चयन करते हैं। तीसरी परीक्षा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित की जाती है। इसके तहत आरबीआई के ग्रेड बी ऑफिसर का चयन किया जाता है। चौथी परीक्षा नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) द्वारा आयोजित की जाती है। इसके तहत ग्रेड ए और ग्रेड बी अधिकारियों का चयन किया जाता है। इनका चयन मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र के बैंकों के लिए किया जाता है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपने बैंकों में कर्मचारियों और अधिकारियों के चयन के लिए परीक्षा स्वयं आयोजित करता है।

प्रतियोगी परीक्षाएं- सेना

सेना में अधिकारी बनने के लिए हर वर्ष 15 लाख छात्र करते हैं तैयारी

देश में हर साल लाखों की संख्या में छात्र सेना में शामिल होने की तैयारी करते हैं। एनडीए और सीडीएस जैसी परीक्षाओं के लिए गहन तैयारी की आवश्यकता होती है। इसकी तैयारी के लिए भी अलग-अलग इंस्टीट्यूट संचालित किए जा रहे हैं। कुछ शहरों में अब शैक्षणिक तैयारी के साथ फिजिकल फिटनेस के लिए भी सेंटर खुल गए हैं।

12वीं के बाद खुल जाते हैं सेना में शामिल होने के लिए परीक्षा के रास्ते

रेलवे के बाद देश में रोजगार देने के मामले में भारतीय सेना दूसरे नंबर पर है। यहां लगभग 13 लाख लोग काम करते हैं। सेना में सबसे निचले स्तर पर सिपाही के तौर पर भर्ती रैली के माध्यम से की जाती है। इसमें विभिन्न ट्रेड्स में ट्रेडस मैन, नर्सिंग असिस्टेंट, टेक्निकल क्लर्क/स्टोर कीपर और जनरल ड्यूटी के लिए सिपाही या सोल्जर के तौर पर भर्ती होती है। इसके बाद सेना में हवलदार और नायब सूबेदार के तौर पर सीधी भर्ती होती है। इंजीनियर (सर्वेयर ऑटो कार्टो), हवलदार शिक्षा, नायब सूबेदार के रूप में जेसीओ के रूप में भर्ती की जाती है।

भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में सीधी भर्ती लेफ्टिनेंट के रूप में होती है। इसके लिए प्रमुख 4 विकल्प हैं :

एसएससी

शॉर्ट सर्विस कमीशन के माध्यम से टेक्निकल और नॉन टेक्निकल दोनों ही पदों पर भर्ती की जाती है। टेक्निकल पदों के लिए बीई, बीटेक, बीआर्क या एमएससी कम्प्यूटर डिग्री प्राप्त 19 से 27 वर्ष तक के युवा आवेदन कर सकते हैं।

आईएमए

इंडियन मिलिट्री एकेडमी के माध्यम से भी टेक्निकल और नॉन टेक्निकल पद भरे जाते हैं। इसके लिए विज्ञान से 12वीं पास 16.5 -19.5 वर्ष तक के तथा नॉन टेक्निकल पदों के लिए स्नातक 19 से 24 साल तक के कैंडिडेट्स शामिल होते हैं।

एनडीए

लेफ्टिनेंट रैंक पर भर्ती के लिए नेशनल डिफेंस एकेडमी परीक्षा संघ लोग सेवा आयोग आयोजित करता है। परीक्षा दो बार होती है। कैंडिडेट्स को फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथेमैटिक्स विषयों के साथ 10+2 पास होना जरूरी है।

सीडीएस

यह परीक्षा भी संघ लोक सेवा आयोग लेता है। एनडीए और सीडीएस में अंतर उम्र और योग्यता का है। एनडीए में उम्र सीमा 16.5- 19.5 वर्ष और योग्यता 12वीं है। सीडीएस में उम्र 19 से 24 वर्ष और योग्यता स्नातक होती है।

शिक्षक मोमबत्ती की तरह होते हैं-

वो खुद को जलाकर दूसरों को रोशनी देते हैं।

•••••

पढ़ाना ही सबसे महान कला है, क्योंकि इसमें मानव बुद्धि और आत्मा माध्यम बनते हैं।

- मुस्तफा कमाल अतातुर्क

••••••

अन्य उभरते क्षेत्र

सोशल वर्क : कोरोना महामारी के बाद बढ़ रही है इस क्षेत्र में मांग

कोरोना पैन्डेमिक के बाद सरकारी व निजी संस्थाओं को पॉलिसी मेकिंग के लिए सोशल वर्क के छात्रों की जरूरत पड़ रही है। इसलिए इनकी मांग में भी बढ़ोतरी हुई है।

सोशल वर्कर्स का मुख्य काम सामाजिक समस्याओं, उनके कारणों का विश्लेषण करना व उनके सामाधान निकालने पर आधारित होता है।

महात्मा गांधी सेंट्रल यूनिवर्सिटी, बिहार के असिस्टेंट प्रोफेसर उपमेश कुमार बताते हैं कि ट्रेडिशनल कोर्स से हटकर छात्र ऑफबीट कोर्स भी कर रहे हैं। इसमें सोशल वर्क का क्षेत्र तेजी से छात्रों के बीच जगह बना रहा है। इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए छात्र ग्रेजुएशन के बाद कोर्स कर सकते हैं। वे सोशल वेल्फेयर एडमिनिस्ट्रेशन एंड सोशल पॉलिसी, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, चाइल्ड प्रोटेक्शन सर्विसेज, सोशल वर्क रिसर्च, रूरल एंड अर्बन कम्युनिटी डेवलपमेंट, क्लीनिकल सोशल वर्क, फैमिली वेल्फेयर एंड थैरेपी, काउंसिलिंग एंड थैरेपी, कंसल्टेंसी सर्विसेज आदि क्षेत्रों में काम कर सकते हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर, डेवलपमेंट ऑफिसर, सोशल साइंटिस्ट, प्रोग्राम मैनेजर, काउंसलर आदि पदों पर सेवाएं देने का मौका मिलता है। देश के कई विश्वविद्यालय सोशल वर्क में पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री देते हैं जैसे पटना यूनिवर्सिटी, महात्मा गांधी सेंट्रल यूनिवर्सिटी- बिहार, काशी हिंदू विश्वविद्यालय-वाराणसी आदि।

- देश में एमएसडब्ल्यू कोर्स संचालित करने वाले कुल कॉलेज- **538**
- **निजी संस्थान- 260** से अधिक
- **सरकारी संस्थान- 120** से अधिक
- **पीपीपी मोड- 43**

आपको अंदर से बाहर की ओर बढ़ना है। कोई भी आपको सिखा नहीं सकता, कोई आपको आध्यात्मिक नहीं बना सकता।

यह काम सिर्फ आपकी आत्मा कर सकती है। आपकी अपनी आत्मा के अलावा कोई दूसरा शिक्षक नहीं है। शिक्षक आपकी आत्मा का संरक्षक है।

- स्वामी विवेकानंद

अन्य उभरते क्षेत्र

फिजिकल एजुकेशन : नई शिक्षा नीति में मुख्य विषय के रूप में शामिल

डिशनल एजुकेशन से हटकर यदि आप कुछ अलग पढ़ने के बारे में सोच रहे हैं तो फिजिकल एजुकेशन कोर्स से पढ़ाई के साथ-साथ अच्छा एक्सपोजर भी मिलेगा।

नई शिक्षा नीति के मुताबिक अब खेल और योग जैसे विषय भी स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल किए जाएंगे। इन्हें सहायक पाठ्यक्रम या अतिरिक्त पाठ्यक्रम (एक्स्ट्रा-करिकुलर) की श्रेणी में नहीं रखा जाएगा। ऐसे में शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षित युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। अभी 100 से अधिक संख्या वाले सरकारी स्कूलों में इनसे संबंधित शिक्षकों की नियुक्ति का प्रावधान है, लेकिन अब सभी स्कूलों में ये शिक्षक रखे जा सकेंगे।

फिजिकल एजुकेशन और फिजियो थैरेपी

स्पोर्ट्स में आपका रुझान है और इसमें कॅरिअर भी बनाना चाहते हैं तो फिजिकल एजुकेशन में अब अच्छा स्कोप है। इसके लिए बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन की तीन वर्षीय डिग्री ले सकते हैं। इसके बाद पीजी प्रोग्राम की पढ़ाई कर सकते हैं। इस डिग्री के साथ आप फिजिकल एजुकेशन के टीचर के अलावा स्पोर्ट्स मैनेजर, फिजिकल थैरेपिस्ट, फिजिकल एजुकेशन ट्रेनर, हेल्थ एजुकेटर, कोच, फिटनेस इंस्ट्रक्टर और स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट बन सकते हैं। फिजियो थैरेपी की बात करें तो लॉकडाउन के बाद वर्क फ्रॉम होम होने की वजह से वर्कआउट बंद है। ऐसे में फिजियो थैरेपिस्ट की मांग बढ़ी है। खुद का क्लिनिक खोलने के अलावा आप अस्पताल में बतौर फिजियोथैरेपिस्ट अपनी सेवाएं दे सकते हैं। यहां आप डिप्लोमा से लेकर पीएचडी तक के कोर्स न्यूरोलॉजिकल फिजियोथैरेपी, पीडियाट्रिक फिजियोथैरेपी, स्पोर्ट्स फिजियोथैरेपी, ऑर्थोपेडिक फिजियोथैरेपी, पोस्ट ऑपरेटिव फिजियोथैरेपी में काम कर सकते हैं। फिजिकल एजुकेशन में तीन तरह के कोर्स होते हैं। 1. डिग्री कोर्स, 2. डिप्लोमा कोर्स और 3. सर्टिफिकेट कोर्स।

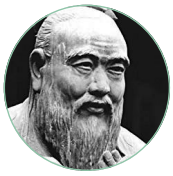

यदि मैं दो अन्य लोगों के साथ चल रहा हूं, तो मैं उन दोनों को ही मेरे शिक्षक के रूप में देखूंगा।

मैं एक की अच्छी बातों को चुनूंगा और उनका अनुकरण करूंगा। मैं दूसरे की बुरी बातों व कमियों को देखूंगा और उनसे बचने की कोशिश करुंगा। इन कमियों को मैं खुद में से दूर करुंगा।

- कनफ्यूशियस

651

देश में कुल फिजिकल एजुकेशन कॉलेज

451

देश में कुल बीपीएड कॉलेज

अन्य उभरते क्षेत्र

एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग: सरकारी नौकरी के लिए भी खुल रहे हैं रास्ते

इन दिनों युवाओं का रुझान कृषि एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर ग्रेजुएशन प्रोग्राम्स के साथ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग में बढ़ा है

क्योंकि कई राज्य सरकारों ने युवाओं को पिछले पांच-छह सालों में इन कोर्सेस से संबंधित सरकारी नौकरियां देनी शुरू की हैं। जैसे ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी। इसके अलावा एग्रीकल्चर यूजी, पीजी प्रोग्राम्स व रिसर्च में भी स्थानीय युवाओं की भागीदारी बढ़ी है।

कृषि क्षेत्र में कॅरिअर बनाने के लिए इंजीनियरिंग व बीएससी-एग्रीकल्चर, बीएससी–एग्रीकल्चर (ऑनर्स)+एग्री बिजनेस मैनेजमेंट जैसे कोर्स किए जा सकते हैं। इसके अलावा छात्र एग्रीकल्चर में एमबीए भी कर सकते हैं। इनके लिए खाद व उर्वरक कंपनियों से लेकर एग्रीकल्चर इक्यूपमेंट इंडस्ट्रीज, एनजीओ, सीड इंडस्ट्रीज आदि में कई मौके हैं। ऐसे ही राज्य सरकारों के पास फिशरीज डिपार्टमेंट है जहां ब्लॉक स्तर तक फिशरीज प्रोफेशनल्स को हायर किया जाता है। इसके तहत असिस्टेंट फिशरीज डेवलपमेंट ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट फिशरीज डेवलपमेंट ऑफिसर, रिसर्च टेक्निशियन व बायोकेमिस्ट के पद ऑफर किए जाते हैं।

इसके अलावा छात्र असिस्टेंट प्रोफेसर, रिसर्च असिस्टेंट आदि पदों पर भी काम कर सकते हैं। पश्चिम बंगाल, ओडिशा व साउथ के राज्यों में प्रोसेसिंग यूनिट हैं जो फिश प्रोडक्ट बाहर भेजती हैं यहां भी कॅरिअर के अवसरों में वृद्धि हुई है। मछली पालन का खुद का स्टार्टअप भी शुरू कर सकते हैं। फिशरीज में कॅरिअर बनाने के लिए देश भर के कई एग्रीकल्चर व फिशरीज संस्थान बैचलर ऑफ फिशरीज साइंस में यूजी की डिग्री देते हैं।

कृषि से संबंधित प्रमुख कोर्स

यूजी लेवल : बीएससी, बीटेक, बीए, डिप्लोमा, बीवोक एवं सर्टिफिकेट कोर्स।

पीजी एवं पीएचडी लेवल : एमएससी, एमटेक, एमबीए, पीएचडी, पीजी डिप्लोमा।

फिशरीज से संबंधित प्रमुख कोर्स : बीएफएससी और एमएफएससी।

एग्रीकल्चर कॉलेज वाले टॉप 5 राज्य

उत्तर प्रदेश	106
पंजाब	84
तमिलनाडु	81
महाराष्ट्र	76
उत्तराखंड	69

शिक्षण की पूरी कला दो बातों पर निर्भर करती है। एक युवा मन की स्वाभाविक जिज्ञासा जागृत करना।

और फिर बाद में जीवन को ऐसे जीना कि किसी तरह का मलाल न रहे। अनुभव बहुत अच्छा शिक्षक होता है, लेकिन इसकी कीमत बहुत बड़ी होती है।

- एंटोन फ्रांस

कोचिंग इंडस्ट्री

देश में 7.5 लाख रजिस्टर्ड कोचिंग, 24 हजार करोड़ रु. की इंडस्ट्री

कोविड के कारण अभी ऑफलाइन कोचिंग बंद हैं, लेकिन कोचिंग इंडस्ट्री ने समय के साथ बदलाव करते हुए ऑनलाइन कोचिंग देना शुरू कर दिया है।

हालांकि जल्द ही कोचिंग इंडस्ट्री भी पूरी तरीके से खुल जाएगी। कुछ साल पहले शिक्षा मंत्रालय को सौंपी गई एक रिपोर्ट में कोचिंग इंडस्ट्री का कुल रेवेन्यू सालाना 24000 करोड़ रुपए बताया गया था। अब राजस्व के 25000 करोड़ तक पहुंचने की संभावनाएं हैं। एसोचैम की रिपोर्ट के मुताबिक हायर एजुकेशन में 95% छात्र प्राइवेट कोचिंग सेंटर्स में जाते हैं।

7.5 लाख
रजिस्टर कोचिंग संस्थानों की संख्या

50 लाख
नॉन रजिस्टर कोचिंग संस्थानों की संख्या

24 हजार करोड़
की है देश में प्राइवेट कोचिंग इंडस्ट्री

हमने सीखा है कि शिक्षक हमें सिखाते हैं, लेकिन सीखना तो सबसे नैसर्गिक बात है।

शिक्षक हमारे सीखने की क्षमता को मांझते हैं। वे हमें बताते हैं कि क्या सीखना कितना, सीखना है, क्यों सीखना है। वे हमारे मन में सवाल पैदा करते हैं और फिर उनका जवाब बन जाते हैं।

- मारिया मॉन्टेसरी

किन राज्यों में कौन-सी कोचिंग

राजस्थान

नॉर्थ इंडिया की कोचिंग कैपिटल कोटा को कहा जाता है। **यहां जेईई मेन, जेईई एडवांस्ड, नीट, एनटीएसई, ओलंपियाड की कोचिंग प्रमुख हैं।** हालांकि यहां पर कुछ संस्थान सीए व सीएस की भी करवाते हैं। यहां की कोचिंग इंडस्ट्री करीब तीन हजार करोड़ की है। शिक्षक भर्ती परीक्षा, आरएएस, नीट व जेईई की कोचिंग जयपुर में करवाई जाती है। इस मामले में सीकर भी बड़े केंद्र के रूप में उभरा है। जोधपुर सीए कोचिंग के लिए पहचाना जाता है। सीए फाउंडेशन के लिए जयपुर भी एक बड़ा हब बना है।

उत्तरप्रदेश

यूपी में करीब दस बड़े कोचिंग इंस्टीट्यूट यूपीएससी के हैं। उत्तरप्रदेश में प्रशासनिक सेवाओं में जाने का चलन अधिक है। इलाहाबाद में सबसे ज्यादा सिविल सर्विसेस के लिए छात्र जाते हैं। वहीं आईआईटी, मेडिकल के लिए कानपुर और लखनऊ में कोचिंग उपलब्ध हैं। अभी यूपीएससी सिविल सर्विसेज में काफी सलेक्शन यहां से हो रहे हैं। जो छात्र दिल्ली जाने में सक्षम नहीं हैं, वे यूपी में जाकर यूपीएससी के विभिन्न एग्जाम्स की कोचिंग करते हैं।

तेलंगाना

तेलंगाना का प्रमुख शहर हैदराबाद आईआईटी की कोचिंग के लिए प्रसिद्ध है। हैदराबाद को साउथ की कोचिंग कैपिटल के रूप में पहचाना जाता है। यहां जेईई मेन व एडवांस्ड के साथ गेट व मेडिकल एंट्रेंस की कोचिंग करवाई जाती है। यहां पर साउथ के छात्र ही अधिक होते हैं।

दिल्ली

कोचिंग के लिहाज से दिल्ली की खासियत यूपीएससी की कोचिंग है। यहां की कोचिंग की फ्रेंचाइजी भी कई शहरों में है। एसएससी, बैंकिंग और यूपीएससी के अधिकांश कोचिंग सेंटर मुखर्जी नगर व राजेंद्र नगर में स्थित हैं। सीएस व सीए के लिए लक्ष्मीनगर पहचाना जाता है।

बिहार

नीट और जेईई के लिए बिहार का पटना काफी प्रसिद्ध हो रहा है। बिहार पीएससी की कोचिंग इस शहर में दी जाती है। पटना भी नॉर्थ के एक बड़े कोचिंग हब के रूप में उभर रहा है। पिछले कुछ सालों में यहां पर स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ी है।

ई-लर्निंग

दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ई-लर्निंग मार्केट है भारत

2025 तक 16.42 लाख करोड़ रुपए की होगी एजुकेशन इंडस्ट्री

वर्तमान में सर्वाधिक युवा आबादी (5-24 वर्ष) लगभग 55 करोड़ भारत में है। देश में स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या लगभग 26 करोड़ है।

ये दो आंकड़े बताते हैं कि एजुकेशन इंडस्ट्री का देश में भविष्य कितना सुनहरा है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार 2020 में देश के एड-टेक स्टार्टअप्स ने लगभग 16204 करोड़ रुपए का निवेश प्राप्त किया जो कि 2019 में मात्र 4036 करोड़ रुपए था। इंग्लिश प्रोफेशिएंसी इंडेक्स 2020 द्वारा जारी आंकड़ों के अनसार दुनिया में सर्वाधिक अंग्रेजी बोलने वाले देशों में भारत का नंबर 50वां है। यह वो बड़ी खासियत है जो भारतीयों को दुनिया में अलग खड़ा करती है। यहां ग्लोबल एजुकेशन तेजी से स्वीकार कर ली जाती है। यही कारण है कि ऑनलाइन एजुकेशन के मामले में भारत अमेरिका के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ई-लर्निंग मार्केट बन गया है। डिपार्टमेंट ऑफ प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड (डीपीआईआईटी) के अनुसार अप्रैल 2020 से मार्च 2021 तक शिक्षा के क्षेत्र में 32811 करोड़ रुपए का एफडीआई हुआ। **(स्रोतः सरकारी डेटा, मीडिया रिपोर्ट्स)**

एक शिक्षक अपने छात्रों को यह बताता है कि वो कितने महत्वपूर्ण हैं।

आपका दिल एक आम इंसान के हृदय से कुछ बड़ा ही होगा क्योंकि आप एक शिक्षक हैं।

शिक्षक का कर्तव्य न ही छोटा है ना कम है, वो दिमाग को विकसित कर चरित्र को नई ऊर्जा देते हैं।

- जोसेफ कैंपबेल

ये हैं भारत में सबसे पॉपुलर आठ ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म

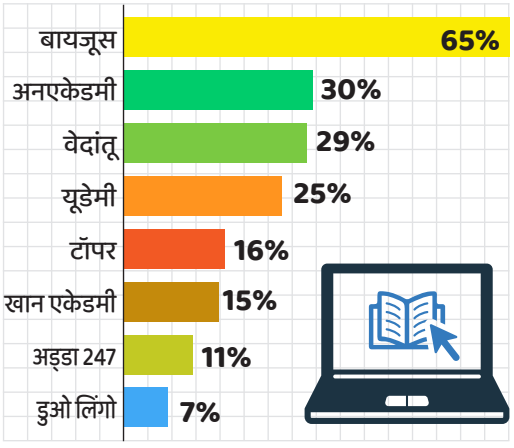

▪ यूजीओवी द्वारा किए गए सर्वे के अनुसार ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म बायजूज देश में सबसे अधिक पॉपुलर प्लेटफॉर्म है। सर्वे में शामिल 65% परिवारों ने बताया कि उनके बच्चे इस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। दूसरे और तीसरे नंबर पर क्रमशः अनएकेडमी और वेदांतु रहे। क्रमशः 30 और 29 फीसदी परिवारों ने बच्चों द्वारा इन प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल की बात कही। यूजीओवी ने 16 से 22 जून 2020 के बीच 1015 परिवारों के बीच यह सर्वे किया था।

ई-टीचिंग में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए विशेष एप

सरकार ने यह नेशनल डिजिटल पोर्टल टीचर्स और स्टूडेंट्स के लिए विशेष रूप से लॉन्च किया है ताकि देश के सभी टीचर्स एडवांस्ड डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट बन जाएं। दरअसल, यह पोर्टल टीचिंग एजुकेशन की फील्ड में आने वाली सभी चुनौतियों और मसलों के लिए लेटेस्ट सॉल्यूशन्स उपलब्ध करवाता है। यह पोर्टल टीचर्स की लर्निंग और ट्रेनिंग में सहायता करता है। इस पोर्टल से टीचर्स अपने टीचिंग सब्जेक्ट्स से संबद्ध टीचिंग कंटेंट, प्रोफाइल, इन-क्लास रिसोर्सेज और असेसमेंट तैयार कर सकते हैं। भारत में कई राज्य सरकारों ने भी दीक्षा के तहत विभिन्न प्रोग्राम शुरू किए हैं। शिक्षा मंत्रालय ने NCET के सहयोग से दीक्षा पोर्टल के माध्यम से इन सभी डिजिटल प्रोग्राम्स एंड सॉल्यूशन्स को एकीकृत कर दिया है।

हमारे इनोवेटिव शिक्षक

परंपरागत शिक्षा में नई राह खोजने वाले छह प्रयोगधर्मी शिक्षक

विद्यार्थी लगातार सीखता रहे यह हर शिक्षक का लक्ष्य होता है। शिक्षक संकट में अलग राह बनाते हैं और व्यवस्थाओं के बदलने का इंतजार नहीं करते। वे स्वयं बदलाव के वाहक बन जाते हैं। देश में ऐसे कई शिक्षक हैं जो शिक्षा के जरिए सामाजिक बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए वे निरंतर प्रयासरत हैं-

रंजीत सिंह : तबेले-गोदाम में बच्चियों को पढ़ाया, 7 करोड़ का ग्लोबल पुरस्कार

महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के परितेवाड़ी गांव के 33 वर्षीय रंजीत सिंह ने शुरुआती दिनों में गोदाम के बीच बनी जर्जर इमारत में आदिवासी लड़कियों को पढ़ाया। इन्होंने किताबों को ऑडियो, वीडियो, कहानियों और असाइनमेंट्स से जोड़ा। इन्हें 7 करोड़ रुपए का ग्लोबल टीचर सम्मान मिला।

एसएल फैजल : पहली बार स्कूल लाइब्रेरी को ब्लॉग पर लाए, ऑडियो लाइब्रेरी बनाई

फैजल एसएल ने 2003 में लाइब्रेरियन के रूप में बारामूला में केंद्रीय विद्यालय जॉइन किया। 2007 में स्कूल की लाइब्रेरी का ब्लॉग तैयार किया। ऐसा करने वाले वे देश के पहले व्यक्ति थे। ई-रीडिंग को बढ़ावा देने के लिए ई-रीडिंग हब' स्थापित किया। 2020 में ऑडियो लाइब्रेरी भी बनाई है।

सपन कुमार : गांव की हर दीवार बनी ब्लैक बोर्ड

झारखंड के दुमका जिले के जड़मुंडी गांव के शिक्षक सपन कुमार ने कोरोना काल में बच्चों को पढ़ाने के लिए गांव के घरों की दीवारों को ही ब्लैकबोर्ड में तब्दील कर दिया। इसके बाद लाउड स्पीकर से बच्चों को पढ़ाने लगे, जिससे सोशल डिस्टेंसिंग का भी पालन हुआ और पढ़ाई भी प्रभावित नहीं हुई।

एनी वर्गीस: देश को पांच महिला ओलंपियन दिए

केरल के त्रिशूर स्थित विमला कॉलेज से देश को पांच महिला ओलंपियन मिल चुकी हैं और इन्हें तराशने वाली पीटी टीचर हैं एनी वर्गीस। इनकी ट्रेनिंग की बदौलत अंजू बॉबी जॉर्ज (2004, 2008), जिंसी फिलिप (2000), मंजिमा (2000), बॉबी (2004), रोसा कुट्टी (1996) देश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

अशोक दवे: इंटरनेट नहीं था तो केबल टीवी से बच्चों को पढ़ाया

गुजरात के शंखेश्वर में ट्रस्ट द्वारा संचालित स्कूल के प्रिंसिपल अशोक दवे ने बिना इंटरनेट सुविधा वाले बच्चों को पढ़ाने का नायाब तरीका खोजा। इन्होंने स्थानीय केबल नेटवर्क ऑपरेटर की मदद से केबल क्लास शुरू की है। स्थानीय लोगों के सहयोग से पढ़ाने के वीडियो बनाए। ऐसे में हर बच्चा लगातार विद्यालय से जुड़ा रहा।

वीरेंद्र कुमार: 80 हजार बच्चों की हैंडराइटिंग सुधारने वाला शिक्षक

शिमला जिले के धरोगड़ा में माध्यमिक स्कूल में शिक्षक वीरेंद्र कुमार 80 हजार से ज्यादा छात्रों की लिखावट सुधार चुके हैं। कई शिक्षक भी उनसे कैलीग्राफी सीख रहे हैं। लॉक डाउन में उन्होंने छात्रों को ऑनलाइन कैलीग्राफी सिखाना शुरू किया। शिक्षा में योगदान के लिए राज्य सरकार ने उन्हें शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित भी किया है।

दैनिक भास्कर
विशेष प्रस्तुति

धन्यवाद शिक्षक

हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने के लिए... सही-गलत का भेद बताने और सीखने की इच्छा जागृत करने के लिए... राष्ट्र, समाज के प्रति हमारे कर्तव्य का बोध कराने के लिए...

और हमारा स्वयं से परिचय कराने के लिए।

दैनिक भास्कर | दिव्य भास्कर | दैनिक दिव्य मराठी | MY FM jiyo dil se! | दैनिक भास्कर | दिव्य भास्कर
India's Largest Newspaper Group | 12 States | 64 Editions | 3 Languages